डॉक्टर

एक मनोवैज्ञानिक नाटक

विष्णु प्रभाकर



मूल्य	:	दो रुपये आठ आने (२·५०)
प्रथम संस्करण	:	मई, १९५८
आवरण	:	नरेन्द्र श्रीवास्तव
प्रकाशक	:	राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली
मुद्रक	:	युगान्तर प्रेस, दिल्ली

दो शब्द

अच्छा होता कि दो शब्द लिखे ही न जाते। नाटक जैसा है, है। उसके बारे में मै क्या कहूँ और क्यों कहूँ। मेरी चीज है, अच्छी ही अच्छी होनी चाहिये।

लेकिन बात इतनी ही नही है। नाटक लिखा है तो खेला भी जाना चाहिये। आज जिस तेजी से खेले जाने वाले नाटकों की माँग आ रही है, उस तेजी से वे लिखे नही जा रहे; उसके कई कारण है। उन पर विचार करने की यहाँ आवश्यकता नही है। शीघ्र ही वह कमी दूर हो जाएगी। मैने भी जब यह नाटक लिखा तो इसी दृष्टि से लिखा। रंगमंच के कई जानकारों से सलाह ली। उनमें लेखक, आलोचक तथा निर्देशक सभी थे। दो बार दिल्ली की एक प्रगतिशील और सुप्रसिद्ध सस्था 'देहली आर्ट थियेटर' के कलाकारो के सामने इसे पढ़ा भी। काफी बहस हुई। काफी लोगों ने इसे पसन्द किया, कुछ संशोधन भी सुझाये। कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्होंने इसके अन्त को आदर्शवादी बताया। अभिनय की दृष्टि से भी उनका मत है कि इसका तीसरा अंक सफलतापूर्वक रंगमंच पर प्रस्तुत नही किया जा सकता, बहुत ही कुशल अभिनेत्री की जरूरत होगी। चित्रपट की बात और है।

एक बन्धु ने सुझाया है कि डाक्टर मरीजा को बचाने के स्थान पर मार क्यों न दे, कम से कम आपरेशन को बीच मे ही छोड़कर भाग जाय। आखिर वह नारी है, नारी क्या नही कर सकती।

फिर वह नारी जिसके साथ अन्याय हुआ हो। पर अधिकांश मित्र इस बात से सहमत नहीं हैं। वह डाक्टर भी, जिन्होंने आपरेशन और रोग के सम्बन्ध में लेखक को पूरी जानकारी दी, इस बात से सहमत नहीं है। उनका कहना है कि तब तो यह डाक्टर के स्वभाव और आचरण के विरुद्ध हो जायगा।

यह सब अभिनय की दृष्टि से लिखा गया है। शेष नाटक जैसा भी है उसे पाठक पढ़े और जाने। मैं देहली आर्ट थियेटर, डा० श्रीकृष्ण, श्री नूर नबी अब्बासी, श्री जे० डी० सिंह तथा अन्य मित्रों का आभारी हूँ जिन्होने बहुमूल्य सुझाव देकर रचना को अधिक से अधिक सुन्दर बनाने में योग दिया। पाठकों के सुझाव का भी मैं स्वागत करूंगा।

८१८ कुण्डेवालान
अजमेरी गेट
दिल्ली ६.

—विष्णु प्रभाकर

पात्र प्रवेश करने के क्रम से :

दादा	डा० अनीला के बड़े भाई, एक कर्नल : आयु ५०-५१ वर्ष
डा० मिसेज सईदा	अनीला की सहयोगी-डाक्टर . आयु ३५-३६ वर्ष
नीरु	नर्सिग होम की एक सनकी मरीजा . आयु ३५-३६ वर्ष
मिस लीला जोसेफ	नर्सिग होम की एक नर्स : आयु २५-२६ वर्ष
सतीशचन्द्र शर्मा	मरीजा का पति · एक इंजीनियर : आयु ४४ वर्ष
रामू	नर्सिग होम का सेवक : आयु ३० वर्ष
डाक्टर अनीला	नर्सिग होम की मुख्य डाक्टर : आयु ३६-३७ वर्ष
गोपाल	मरीजा का बेटा : आयु १० वर्ष
काकी	अनीला की सेविका : आयु ६० वर्ष
डा० केशव	अनीला के अभिन्न : प्रसिद्ध एनसथेटिस्ट : आयु ४३-४४ वर्ष

मरीजा अन्तिम दृश्य मे आती है। केवल लेटी रहती है। काकी का अभिनय करने वाली महिला मरीजा बन सकती है।

समय

१९५०-६० का भारत

स्थान

बम्बई अथवा कोई भी बड़ा नगर

पहला अंक

दृश्य १

(रंगमंच पर डा० अनीला के नर्सिंग होम में उनका दफ्तर। सामने के दरवाजे बरामदे में खुलते है। बाईं ओर का दरवाजा हमेशा नहीं खुलता। दाईं ओर के दरवाजे से सब आते-जाते है। मंच पर बाईं ओर जो दरवाजा है वह किसी दूसरे कमरे में जाता है जिसमें नर्स और दूसरे कार्यकर्त्ता बैठते है। दाईं ओर आराम करने का कमरा है। बरामदे वाले दोनों दरवाजों के बीच में एक अलमारी है। उसमें पुस्तकें हैं। दोनों ओर कलैण्डर या चार्ट हो सकते है। ऊपर घड़ी है। अलमारी के नीचे एक बड़ी मेज है जिसके चारों ओर कुर्सियां हैं। मेज़ पर दफ्तर का साधारण पर स्वच्छ सामान। दाईं ओर के द्वार के पास एक सोफा सेट है। उस पर आगन्तुक बैठते हैं। दीवारो पर अधिक नहीं केवल दो-चार चिकित्सालय संबन्धी जानकारी के चार्ट व चित्र है। बाईं ओर वाले दरवाजे के इस ओर एक खिड़की है। उससे इधर की ओर एक और मेज़ है जिस पर एक छोटा-सा अलमारी-नुमा बुक-केस है जिसमे डाक्टरी की किताबें है। मेज पर स्टेथ्स्कोप आदि रखे है। टेलीफोन बड़ी मेज़ पर है। फर्श पर नीली दरी और दरवाजों पर सुन्दर कलापूर्ण परदे हैं। ग्रीष्म ऋतु के एक सवेरे पर्दा उठता है। मेज पर दादा बैठे है। आयु पचास के ऊपर पर स्वस्थ-दबंग और सैनिक वेश में है। हाथ में पिस्तौल है। बाईं ओर की कुर्सी पर डा० सईदा बैठी है।

आयु उनकी ३५-३६ के आसपास है। इकहरा बदन और मुख पर आत्मविश्वास है। सफेद साड़ी पर सफेद कोट पहने है। हाथ में स्टेथस्कोप है। दोनो बातें कर रहे हैं।)

दादा

तो यह कहा नीरु ने कि हम सब मशीन है। ठीक भी है। (चार्टों को दिखाकर) इन चार्टों को देख कर यही कहा जा सकता है। लेकिन डाक्टर! कुछ भी हो, हम आदमी की बनाई मशीन से फिर भी अच्छे है।

सईदा

जानती हूँ, दादा। हमारे पास दिल है लेकिन वह कहती थी कि यह दिल भी मशीन का बना हुआ है।

दादा

(प्रभावित होने का नाट्य करते हुए) यह कहा उसने! हमारे दिल मशीन के बने है। यानी...यानी हम सहज भाव से कुछ नही करते, हिसाब लगा कर करते है। (बराबर किसी वस्तु से खेलते रहते हैं)

सईदा

(चकित होने का नाट्य करती है) सच दादा! उसने यही कहा कि तुम सब हिसाबदां हो, निरे हिसाबदां...

(सहसा बाहर से एक मरीजा का प्रवेश। अधेड़ उम्र (३५-३६), सिर पर पट्टी बँधी है। एक हाथ स्लिंग में है। मुख पर कुछ दीनता-सी झलकती है। उसे देखते ही दोनों चौंकते है।)

सईदा

लो वह आ गई, थिंक आव दी डैविल एण्ड शी इज देयर।

दादा

(एकदम) नीरु, तुम यहां कैसे आई ?

नीरु

चल कर दादा। आपने बोलने को मना किया है, चलने को नहीं...

सईदा

नीरुजी, आप इतनी समझदार हैं फिर भी...

नीरु

समझदार हूँ तभी तो आना पड़ा। समझती हूँ कि चलने-फिरने से खाना-पीना पच जाता है। विचार तक पच जाते हैं। मुझे आप सब आधी पागल कहते है...

दादा

जब कि तुम पूरी पागल हो।

नीरु

(चमक कर) पूरे पागल आप हैं। हमेशा हिसाब करते है और हिसाबदां पूरे पागल होते है।

दादा

(हँस कर) नीरुजी, आप इन बातों की चिन्ता न करें...

नीरु

चिन्ता मै कहां करती हूँ। इस चिड़ियाघर में कोई कर भी नही सकता। वह दीदी का काम है। मै तो केवल आपको सूचना देने आई थी।

दादा

सूचना मिल गई।

सईदा

अव आप आराम करे।

नीरु

अजीव वात है, आप कहते हैं—आराम करो। प्रधान मन्त्री कहते हैं कि आराम हराम है। मै समझती हूं कि वह सच कहते है। जव से दीदी यानी डाक्टर अनीला गई है तव से यहां आप ही आप आराम हराम हो गया है। सव हिसाव लगाने लगे है...

दादा

(मुस्कराकर उठते हैं) मै कहता हूं कि आप अपने कमरे मे जाएं। आपका स्वास्थ्य ऐसा नही है कि...

सईदा

(उठती है) चलिये मै आपको छोड़ आऊं।

(वरवस पर सावधानी से उन्हे वाहर ले जाती है।)

दादा

(घमते हुए) अनीला को गये अभी पन्द्रह दिन भी नही हुए है कि सवका आराम हराम हो गया; सव हिसाव

लगाने लगे। वाह, क्या भाषा बोलते है लोग...

सईदा

(जाते-जाते मुड़ कर) यह सब इसीलिये है दादा, कि उन्हें सब लोग बहुत प्यार करते है। उनके बिना रह नहीं सकते।

(जाती है)

दादा

लेकिन इसका यह मतलब तो नही कि वह अपनी जान दे दे। दो साल से वह नर्सिंग होम से बाहर नहीं गई। अब गई है तो...

(तेजी से नर्स, मिस लीला जोसेफ का प्रवेश, आयु २५-२६ वर्ष, वर्ण श्याम, नयन नुकीले, स्नेह पूर्ण, वदन इकहरा, मुख पर चंचलता, सदा तेजी में रहती है।)

लीला

दादा, एक नया केस आया है।

दादा

नया केस, कौनसा ?

लीला

बिल्कुल नया।

दादा

यानी उनके पास मंजूरी नही है। कौन लोग है ?

लीला

बड़े लोग है। मरीजा के पेट में बड़ा तेज दर्द उठता

है। बड़ी उल्टियां आती हैं। बड़ी दुर्बल है।

दादा

(एकदम) बड़े-बड़े, लेकिन मैं पूछता हूं वे बड़े हैं कौन ?

लीला

जी बड़े इंजिनियर है। बड़ी दूर आसाम से बदल कर पूना आये हैं।

दादा

ओह ! वे बड़े इंजिनियर नाम क्या बताते है।

लीला

श्री एस० सी० शर्मा—श्री सतीशचन्द्र शर्मा।

दादा

(सोचते हुए) सतीशचन्द्र शर्मा—इंजिनियर, तुमने कहा कि वे आसाम से आये है ?

लीला

जीहाँ। पूना में लगे हैं पर रहने वाले झांसी के है। (सहसा बाहर तेज आवाज उठती है) 'डाक्टर ! डाक्टर साहब !' (दादा चौंकते हैं।)

दादा

(चौंक कर) झांसी के इंजिनियर श्री सतीशचन्द्र शर्मा। गोरे-गोरे, गठे हुए बदन के, अफसरी शान में बड़ी-बड़ी बातें करते हैं।

लीला

जी हां वही। आप उन्हें जानते है? वह अपनी पत्नी को भरती कराना चाहते है...

(दादा सहसा घूमने लगते हैं।)

लीला

तो क्या कहूं दादा ?

दादा

लीला ! उनसे कह दो कि वह लौट जाएं।

लीला

(अनबूझ-सी) जी क्या...

दादा

(धीरे से) उनसे कह दो कि वह लौट जाएं...देखती क्या हो, जाकर कह दो। (वह फिर भी नहीं जाती) अरे तुम सुनती क्यों नही, मिस जोसेफ। मै कह रहा हूँ कि उनसे जा कर कह दो कि मरीजा के लिए इस नर्सिग होम में जगह नही है।

लीला

(एकदम) अच्छा दादा (मुड़ते-मुड़ते) लेकिन दादा...

दादा

(दृढ़ स्वर) वहस मत करो सिस्टर। उन्हे जाना होगा।

लीला

दादा सुनो तो...

दादा

(तेज होकर) जाओ...

तेजी डाक्टर सईदा का प्रवेश)

सईदा

लीला, जल्दी करो। श्रीमती शर्मा की तबियत बहुत खराब हो गई है! उल्टियां आ रही है। उषा को मैंने दवा बता दी है। तुम जाकर उन्हें कमरे में लिटाओ। केस सीरियस है।

लीला

अभी जाती हूं।

(एक बार दादा को देखकर झिझकती है फिर तेजी से जाती है।)

सईदा

दादा! ये लोग बिना किसी सूचना के आगये है। मरीजा की हालत बहुत खराब है।

दादा

सुन चुका हूँ पर यहां उनके लिए जगह नहीं है। उन्हें जाना होगा।

सईदा

(चकित) क्या...क्या आप उन्हे जानते है?

दादा

मै हर सवाल का जवाब नहीं दे सकता। उनसे कह दो कि वे चले जाएं।

सईदा

(एकदम हत्प्रभ) जी, जीहां, कहे देती हूं।...दादा।

क्या बात है ? क्या आप...

दादा

(एकदम कांप कर) कुछ नही, कोई बात नही (दृढ होकर) मै उन्हें इस नर्सिग होम मे दाखिल नहीं करूंगा।

सईदा

पर क्यों ? वह बहुत बीमार है, दादा।

दादा

(पूर्वतः) कोई चिन्ता नहीं। हुआ करे।

सईदा

लेकिन आज से पहले तो इस नर्सिग होम मे कभी ऐसा नही हुआ।

दादा

जो अब तक नही हुआ वह आगे भी नहीं होगा, ऐसा कोई नियम है क्या ?

सईदा

नियम मै नही जानती और न आपसे बहस कर सकती हूँ। पर इतना जरूर जानती हूं कि जहां तक हो सकता है इस नर्सिंग होम से किसी को लौटाया नही जाता। इसलिये जब डाक्टर अनीला इस घटना के बारे में सुनेगी तो...

दादा

(एकदम) तो वह नाराज होंगी।

सईदा

ज़रूर होंगी।

दादा

डाक्टर सईदा! मुझसे ज्यादा अनीला को जानने का दावा मत करो। इस मरीजा को इस नर्सिंग होम में जगह नही मिलेगी।

सईदा

(हतप्रभ) बहुत अच्छा। बहुत अच्छा...

(वह जाने को मुड़ती है कि तभी बाहर से तेज घबराई आवाज आती है।)

सतीशचन्द्र शर्मा

(करुण स्वर) डाक्टर, डाक्टर! मरीजा को दौरा पड़ गया है। जल्दी आइये...मरीजा को दौरा पड़ गया...

(यह स्वर सुनते ही दादा का शरीर तन जाता है। सईदा ठिठकती है, डरती है।)

दादा

वह अन्दर नहीं आ सकता। तुम शीघ्र उन्हे विदा कर दो, शीघ्र...

सतीशचन्द्र शर्मा

डाक्टर, जल्दी आओ...जल्दी आओ।

दादा

जाओ।

सईदा

(जागकर) अभी जाती हूँ। अभी···

(तेजी से जाती है। दादा एकदम कुर्सी पर गिर पड़ते है। कई क्षण संज्ञाहीन से शून्य में ताकते है। तभी नर्सिंग होम का सेवक रामू वहां आता है। मस्त, चिन्ताहीन ३० वर्षीय युवक, हाथ में आज की डाक है। ठिठकता है।)

रामू

दादा ! दादा !!

दादा

(चौंक कर तीव्रता से) क्या है ?

रामू

डाक है, दादा !

दादा

यही रख दो।

रामू

जीहाँ। रख तो देगा ही। (रखता है) वह जो नया मरीज आया, हालत उसका ठीक नहीं। बराबर उल्टी, कै, वमन, डाक्टर कहता उसको दौरा है। दादा ! दौरा तो घूमने को बोलता। उसका पेट घूमता...

दादा

(चीख कर) तुम नही जाओगे !

रामू

जायेगा, दादा ! जायेगा नहीं तो और क्या करेंगा। पर आप ऐसा गुस्सा क्यो होता, और हम बता देता कि

डाक में मिस साहब का चिट्ठी है।

(जाता है। दादा तेजी से डाक देखते है और एक पत्र फाड़ कर पढ़ते हैं। धीमे-धीमे, फिर धीरे-धीरे, इतने तेज कि सब सुन लें)

...मां की तो पूछो मत। सपने में बड़बड़ाया करती है। हर मरीज का नाम लेकर पूछती है। उनको दवा बताती हैं। आदेश देती है। दादा, आपने मा को क्या बना दिया। कहती रहती है कि मरीज मेरी याद करते होंगे। दादा और डाक्टर सईदा के होते हुए भी मेरा मन वहीं पड़ा है।

दादा! यह स्वभाव की दासता है न? क्यों दादा! जो स्वभाव का दास बन जाता है वह मशीन नहीं बन जाता...

(एकदम पढ़ना बन्द करके)

मशीन! मशीन! सब मशीन की बाते करते हैं। क्या इस नर्सिग होम में सब काम मशीन की तरह होता है? क्या अनीला मशीन बन गई है? क्या हमारे दिल भी मशीन के बने हैं? (अल्प विराम, दादा खड़े हो जाते हैं। पीठ पर हाथ करके घूमते हुए याद करके, बोलते हैं) मैंने कहीं पढ़ा था कि 'इन्सान का दिल मशीन है लेकिन ऐसी मशीन जो शोर को संगीत में बदल देती है।' संगीत में, यानी...

(तेजी से लीला का प्रवेश)

लीला

दादा! डा० सईदा ने पूछा है कि आपकी आज्ञा

हो तो उन्हें सात-आठ दिन की दवा दे दी जाय।

दादा

(चोट पीकर) क्यों न दे दी जाय? डाक्टर से कहो कि वह मरीजा को अच्छी तरह देखे और हो सके तो किसी दूसरे नर्सिंग होम के लिए पत्र लिख दे।

लीला

जी...जी बहुत अच्छा।

(उसी तेजी से जाने को मुड़ती है।)

दादा

सुनो!...

लीला

(मुड़कर) मुझे बुलाया आपने?

दादा

हाँ...क्या मरीजा की तबियत वाकई बहुत खराब है?

लीला

अब कुछ ठीक है।

दादा

वे जा रहे हैं न?

लीला

जीहां। उन्हें यकीन दिला दिया गया है कि नर्सिंग होम में बड़ी भीड़ है; सचमुच जगह नहीं है।

दादा

(फिर चोट पीकर) तुमने ठीक किया।

लीला

जी ! मै जाऊं, वे राह देख रहे है (फिर मुड़ती है)

दादा

(एकदम) रुको।

लीला

(मुड़कर) जी वे...

दादा

(रुक-रुककर) लीला ! डाक्टर से कहो कि वह मरीजा को दाखिल कर ले।

लीला

(सकपका कर अनबूझ-सी) जी ई ई...

दादा

मै कहता हूं कि मरीजा को दाखिल कर लिया जाय।

(पेपर वेट उछालता है।)

लीला

(हतप्रभ) मरीजा को, दाखिल कर लिया जाय...।

दादा

हां...हां...

लीला

अपने नर्सिंग होम मे !

दादा

जी हाँ...जी हाँ...जी हाँ...

लीला

(पूर्ववत: अनबूझ) जी बहुत अच्छा। जी, आपने कहा नकि मरीजा को दाखिल कर लिया जाय।

दादा

तुमने ठीक समझा, हमने यही कहा।

लीला

जी...जी आप वड़े, बडे...

(भागती है। दादा तेजी से बैठते हैं, पेपर वेट तेजी से मेज पर गिर पड़ता है। तभी रामू आता है।)

रामू

दादा साहेब ! अपनक्‌ छुट्‌टी चाहिये।

दादा

छुट्‌टी ! और तुमको।

रामू

हां दादा, अपनक्‌। अपनक्‌ एकदम छुट्‌टी चाहिए।

दादा

एकदम छुट्‌टी चाहिए तो यमराज के पास अरजी भेजो।

रामू

वह तो अपन पैदा होने से पहले ही भेज आया था। पण फिलहाल अपन इस नर्सिंग होम से छुट्टी चाहेगा।

दादा

क्यो ?

रामू

क्यों क्या, दादा। अपनका जी नही लगता। बीमारों के साथ रहते-रहते अपनकी अक्ल भी बीमार पड़ गया। और जब से डाक्टर दीदी गया तब से तो दादा! आपकी अक्ल भी, माफ करना दादा...

दादा

(शान्त पर तेज) रामू...

रामू

अपनने पहले ही माफी मांग लिया, पण दादा, अपनने गलत तो नही कहा, दादा।

दादा

रामू। मै घर जारहा हूं। एक हफ्ते बाद लौटूंगा। डा० सईदा से कह देना!

रामू

जी...

दादा

और यह तार लिखा रखा है। अभी भिजवाना है। अनीला कल आ जाएगी...

रामू

जी...जी...

दादा

रामू ! ऐसा उल्लू की माफिक क्या देखता। डा० सईदा से कह दो कि मै एक हफ्ते के लिए घर जा रहा हूँ। अनीला को तार भिजवा दें। वह कल आ जाएंगी। समझा...

रामू

दादा, आप नाराज क्यो होता। हमने कहा नही कि अपनकी अक्ल बीमार हो गया है। मिस साहब से इन्जेक्शन लगाने को बोला पण (दादा नहीं सुनते, चले जाते हैं) आप भी नही सुनता। इस अस्पताल में सब बीमार। आप भी बीमार...

(डा० सईदा का प्रवेश)

सईदा

क्या बात है रामू ! कौन बीमार है ?

रामू

आप !...ओह आप ! डाक्टर साहब ! दादा बोला कि हम एक हफ्ते के लिए घर जाता है। डाक्टर दीदी कल आ रहा है।

सईदा

क्या ! डाक्टर अनीला कल आ रही है।

रामू

जीहाँ। अपनकूं तार देने को बोला। अपन

जाता है।

(जाता है)

सईदा

समझ में नहीं आता, क्या बात है ?

(लीला आती है।)

लीला

डाक्टर ! ऊषा ने उनका सब इन्तजाम कर दिया है लेकिन यह क्या बात है...

सईदा

क्या बात ?

लीला

कि दादा एकाएक चले गये और डाक्टर दीदी एकाएक आ रही हैं।

सईदा

सुना तो मैंने भी है...

लीला

बड़ी अजीब बात है। क्यो डाक्टर, आपको यह बड़ा अजीब नही लगता ?

सईदा

क्या...?

लीला

दादा का इस तरह बर्ताव करना...

सईदा

लीला ! दूसरों की जिन्दगी में इतना गहरा जाने की कोशिश मत करो। अपना काम देखो। जाओ...

(तेजी से नीरु का प्रवेश)

नीरु

(आते-आते) बिना गहरा जाये क्या कुछ हाथ लगता है डाक्टर।

सईदा

आप फिर आ गई।

नीरु

आना पड़ा डाक्टर। आपने कुछ सुना ?

सईदा

(चिढ़चिढ़ाहट) क्या ?

नीरु

इस नर्सिंग होम में भूचाल आने वाला है।

लीला

आने वाला है ? मै तो समझी थी कि आ चुका।

सईदा

ओह ! तुम लोग नर्सिंग होम की इतनी चिन्ता क्यों करते हो। अपनी ओर क्यों नही देखते। मेहरबानी करके अपने कमरे में जाइये। मिस जोसेफ इन्हे ले जाओ।

(लीला नीरु को सहारा देकर ले जाती है।)

नीरु

(जाते-जाते) घर वालों से कहना कि वह घर की चिन्ता न करें, औलाद से कहना कि वह अपनी मां के बारे में न सोचें। जान पड़ता है डाक्टर कि आप भी बीमार है। यहां सब बीमार हो गये है। अधिकारी भी बीमार, नौकर भी बीमार, डाक्टर भी बीमार। बेचारा बीमार...

लीला

(जाते-जाते) मजबूर होकर उस बेचारे को डाक्टर बनना पड़ रहा है।

(दोनों हँस पड़ती हैं। सईदा तेजी से उन्हें देखती है पर वे बाहर हो चुके है और परदा गिर रहा है। सईदा उसी तरह पुस्तकें लिए पीछे-पीछे जाती है। पटाक्षेप।)

दृश्य २

दूसरे दिन सबेरे

(पहले दृश्य वाला स्थान : परदा उठने पर वहां कोई नहीं दिखाई देता। क्षण भर बाद नर्सो वाले कमरे से मिस लीला और रामू बातें करते-करते आते है और ठीक-ठाक करने लगते है।)

लीला

रामू ! तुम तो बहुत दिन से दीदी के साथ हो। क्या वह हमेशा ही ऐसी थी ?

रामू

मिस साहब ! अपनने तो नर्सिंग होम का नांव रखवाया। आपने अपनका फोटो नही देखा ? मिनिस्टर साहब को चांदी का तसला मे मसाला अपनने ही दिया। अपनकू ठीक मालूम कि दीदी तब भी तप करता था। दादा की पिस्तौल और दीदी का तप...

लीला

(एकदम) क्यों रामू ! दादा यह पिस्तौल क्यों लिए रहते है ?

रामू

अपनकू ठीक-ठाक मालूम नही, परण एक बार अपनने देखा कि दादा ने पिस्तौल से बहुत सी मूलियां काट डाली...

लीला

(रुक कर) मूलिया..

रामू

हां मिस साहब, अपन को बीमारी की कसम जो झूठ बोला। अपन एकदम सत्यवादी...शोत्तोबादी। अपन थोड़ा-थोड़ा बंगला भी सीखंगा।

लीला

(हंसती हुई) सो तो तुम करेंगा लेकिन मूलियां क्यों काटी ?

रामू

मिस साहब ! आपकू पता नहीं; लड़ाई में सिपाहियों को गाजर-मूली की तरह काटते है ।

लीला

पर यह तो मुहावरा है ।

रामू

मिस साहब ! अपन भी तो मुहावरा बोला । दादा ने अपनकू बहुत मुहावरे बताये । जैसे घास काटना, कान काटना, पेट काटना और हां, जेब काटना पण खैर, अपन तो सिर्फ कान काटने में यकीन करता और आप पेट और जेब काटने में । (धीरे से) पण मिस साहब ! दादा शायद किसी को एक दम काट डालना मांगटा तभी उन्होंने शादी नही किया ।

लीला

(चकित)शादी नही किया ? तो दादा गांव में किसके बाल-बच्चों के पास जाते है ।

रामू

मिस साहब ! आप अभी बच्चा हैं । वह शादी तो पिछले जन्म मे रही...

लीला

पिछले जन्म में...क्या मतलब..

रामू

मतलब यह कि मिस साहब ! जब वह शादी हुई तो

दादा कर्नल नहीं था। किसी कूं जब ऊँचा पद मिल जाता तब वह दूसरी शादी करना मांगटा यानी एक शादी शादी की उमर में होता, दूसरी शादी अफसरी की उमर में, एक शादी धरम क्री शादी, दूसरी रुतबे की (हंसकर) आपकी भी मिस साहब दो शादी होगा...

लीला

(बनावटी क्रोध) मूर्ख शैतान। दीदी ने सर चढ़ा-चढ़ा कर दिमाग खराब कर दिया है।

रामू

(हँसता हुआ) सच मिस साहब। यहां सबका दिमाग खराब होना मांगता। हमारे गुरु ने ठीक बोला कि अस्पताल में मरीज अच्छा होता पण जो अच्छा है वह बीमार हो जाता। एक बार अपनने दीदी को बोला—दीदी! आप कभी आराम करना क्यों नही मांगता।

लीला

(सोफे पर बैठ जाती है) तब दीदी ने क्या कहा ?

रामू

(पूर्वतः काम करता हुआ) दीदी बोला—काम करना आराम करना है। कभी तुमने सूरज को आराम करते देखा है।

लीला

सूरज की खूब कही। वह भी क्या आदमी है।

रामू

अपन भी यही बोला। अपन ने कहा—सूरज देवता है। देवता कभी नही सोता, कभी नही थकता। दीदी ने एकदम बोला—वह भी देवता बनेगा। फिर कभी नहीं थकेगा। कभी नही सोयगा...

लीला

दीदी को मजाक करना खूब आता है।

रामू

(धीरे से पास आकर) मिस साहब ! अपनकू को ऐसा लगता जैसे मजाक करने वालों के भीतर कोई बडा तेज दर्द होता, तीखा-तीखा बेचैन करने वाला (जोर से) पण खैर दीदी ने मजाक किया तो अपनकू रास्ता मिल गया। बोला, दीदी ! देवता लोग सुरग मे रहता और सुना कि उधर का पासपोर्ट हार्टफेल हो जाने पर ही मिलता। (फिर काम में लग जाता है)

लीला

(उठती हुई) जवाब तुमने खूब दिया। दीदी को बोलते न बना होगा।

रामू

हां मिस साहब ! बोलता क्या, हसां, खूब हसां... जब किसी को बोलते न बनता तो वह गुस्सा करता या हँसता।

(तभी हँसी की खिलखिलाहट पास आती है। दोनों चौंककर बाहर को देखते हैं।)

लो वह आ गई। हँसना मांगता तब जरूर गड़बड़ हैगां।

(तभी हँसते हुए डा० अनीला और डा० सईदा का प्रवेश। डा० अनीला साड़ी पहने और जूड़ा बांधे है। आयु ३६-३७ के लगभग है पर लगती २७-२८ वर्ष की है। मुख पर सिपाही की-सी दृढ़ता और दार्शनिक की-सी प्रौढ़ता है। उनके आते ही रामू तेजी से नमस्कार करके बाहर चला जाता है। मिस लीला कुछ कागज लेकर मेज पर रखती है।)

अनीला

क्यों लीला ! नई मरीजा के कागज ले आई ?

लीला

जीहां ! ये रहे।

अनीला

ठीक है। इन्हे देखकर मै अभी तुम्हारे साथ चलती हूं।

सईदा

लेकिन दीदी ! अभी आपको आये देर कितनी हुई है। आते ही मरीजा...

अनीला

(हँसकर तुरन्त) मरीजा के लिए ही तो आई हूं। दादा

की बात मेरी समझ में नही आरही । मुझे बुलाकर वह न जाने क्यों चले गये...

सईदा

वह तो मैंने बताया था न कि आपको तार देकर...

अनीला

हां, वह और भी...

(तभी सहसा बाहर जोर का शोर उठता है । रामू किसी को जोर से धमकाता है पर एक बालक-स्वर उससे भी ऊपर उठ जाता है ।)

गोपाल

(तेज स्वर) मैं अभी मिलूंगा । मैं डाक्टर साहब से अभी मिलूंगा ।

रामू

नई, नई, कल सवेरे आने को बोलेंगा । मिलने के वक्त मिलेगा ।

गोपाल

मुझे एक बात कहनी है । बस एक बात ।

रामू

कल कहेंगा । एक नही दस कहेगा, पर कल...

गोपाल

नही, नही मै अभी कहकर चला जाऊंगा...

रामू

(तेज) अरे रुक...रुक । डाक्टर दीदी अपनकी जान

निकाल देंगा। अरे (पास आकर) अरे रुकता क्यों नही रे...

(झगड़ते हुए दोनों अन्दर आ जाते हैं।)

गोपाल

डाक्टर साहब ! डाक्टर साहब !!...

रामू

अपनने वहौत रोका दीदी, पण यह तूफान...

(अनीला उस सुन्दर स्वस्थ बालक को देखते ही चौंकती है। आयु दस के लगभग है पर बड़ा ही चतुर व चंचल ज्ञान पड़ता है।)

अनीला

(एकदम) यह कौन है ?

रामू

नई मरीजा का बेटा।

सईदा

यह गोपाल है, दीदी।

गोपाल

बस मै एक बात कहूंगा, बस एक बात।

अनीला

तो यह नई मरीजा का बेटा है।

रामू

दीदी। यह बड़ा ही शैतान...

अनीला

(एकदम) तुम जाओ रामू (रामू जाता है) बैठो गोपाल।

गोपाल

जी बैठ गया (बैठ जाता है)

अनीला

तुम्हारी मां बीमार है ?

गोपाल

जीहां, तभी तो आपके पास आई है। आपका नाम सुना था...

अनीला

(बराबर देखती रहती है) तुमने सुना था...

गोपाल

जीहां, सुना था तभी तो...

अनीला

किससे सुना था ?

गोपाल

पिताजी से सुना था। कहते थे कि आप बहुत बड़ी डाक्टर हैं।

अनीला

(हसकर) तुम्हारा क्या ख्याल है ? कुछ बड़ी दिखाई देती हूं।

गोपाल

हां, हां, मुझसे बहुत बड़ी है। (पास आकर खड़ा हो जाता है) देखो, मैं कितना छोटा हूं। पिताजी कहते थे...

सईदा

और तुम नहीं कहते फिरते कि डाक्टर अनीला बहुत

बड़ी डाक्टर है। वे मेरी मां को अच्छा कर देंगी। दीदी ! मां को यही कहकर तसल्ली दिया करता है।

गोपाल

पिताजी कहते थे...

अनीला

(एकदम) अच्छी बात है। मै तुम्हारी मां के कागज देखकर अभी आती हूँ।

गोपाल

पिताजी कहते थे कि आपके आते ही...

अनीला

(आज्ञा के स्वर में) लीला ! तुम गोपाल को लेकर जाओ। उपा को मेरे पास भेज दो। हम सब अभी उधर आते है...

लीला

आओ तो गोपाल...

गोपाल

नहीं, नहीं, पिताजी कहते थे...

अनीला

पिताजी ने यह भी तो कहा होगा कि डाक्टर जो कहे उसे मानना। जाओ, हम अभी आते है। तुम तो अच्छे बेटे हो।

गोपाल

जीहां, पिताजी कहते थे...

(सब हँस पडते हैं। लीला और गोपाल मुड़ते हैं, अनीला उन्हे देखती है। मुड़ते-मुड़ते गोपाल कहता है)

क्यों डाक्टर साहब! मेरी मां अच्छी हो जाएगी ना?

अनीला

हां, हां, यहां सब अच्छे होने के लिये ही आते है।

गोपाल

और हो जाते है। पिताजी कहते थे...

(दोनों जाते हैं। अनीला उधर देखती-देखती ध्यानस्थ-सी हो ज.ती है।)

सईदा

क्या सोचने लगी, दीदी!

अनीला

कुछ नही सईदा...ऐसा लगता है कि जैसे इसे पहले भी कही देखा है।

सईदा

सच दीदी! मुझे भी ऐसा ही लगा था। शशि और इसकी आखे...

अनीला

(कांपकर) शशि और इसकी आंखें! वही तो, वही तो मुझे भी भ्रम हुआ, और आखे ही क्यो? (तेजी से कागज

पलटती है) क्या नाम है इसके पिता का, (पढ़ती है) सतीशचन्द्र शर्मा...

सईदा

जीहां, झांसी के रहने वाले है। अभी तक आसाम मे थे, अब पूना मे...(अनीला हठात् पीली पड़ जाती है) दीदी, दीदी, क्या बात है ? क्या हुआ आपको ?

अनीला

(एकदम तेज़) मै पूछती हूँ कि इसे किसने दाखिल किया ? किसकी आज्ञा से...

सईदा

क्षमा करे दीदी ! यह सब दादा ने किया है। एक बार तो उन्होने मना कर दिया था पर...

अनीला

(पूर्वतः तेज) मैं कहती हूँ कि इन्हें निकाल दो...

सईदा

दीदी !

अनीला

(पूर्वतः तेज़) हां, मै ठीक कहती हूं कि इस मरीजा के लिये इस नर्सिंग होम मे स्थान नही है।

सईदा

लेकिन दीदी ! सोचो तो दाखिल करने के बाद...

अनीला

(धम्म से बैठ जाती है) ओह, ओह, तो उससे कहो कि वह

खुद चली जाये। ओह, मै क्या करूं (सिर मेज पर रख देती है।)

सईदा

आपकी तबियत शायद कुछ अधिक खराब है। आप आराम करें। मैं रामू को भेजती हूं। (पुकारती है) रामू...

अनीला

(एकदम उठ कर) नही, नही, मैं बिल्कुल ठीक हूं। अभी आती हूं। मै अभी मरीजा को देखूंगी। कृपा कर किसी से कुछ न कहना। हां, एक कप चाय तो भिजवा दो।

(तेजी से अन्दर जाती है। सईदा ठगी-सी बाहर जाती है। तभी रामू आता है।)

रामू

इधर तो कोई नही। अपनकू कौन पुकारता था? अजीब बात है, अब तो इस होम में नई-नई बाते होने लगा...

(नीरु का तेजी से प्रवेश)

नीरु

दीदी! दीदी!! क्या मैं सचमुच पागल हूं।

रामू

जीहां (एकदम) अपनको तो यहां सभी पागल नजर आते।

नीरु

जो पागल होता है उसे सभी पागल नजर आते हैं। (हंसती है)

रामू

(तेजी से) क्या ? क्या बोला (सहसा हँस कर) बोला तो तुमने ठीक। इतना दिन हो गया पर अपनको पता नही लगा कि...

नीरु

क्या ?

रामू

(धीरे से) यही कि दीदी सचमुच विधवा है या सचमुच सधवा।

नीरु

(ठहाका मारकर) तू जरूर पागल है। आजकल विधवा और सधवा में कोई अन्तर नही होता। दोनों स्त्रियां होती हैं।

रामू

(उसी तरह हँसता है) अपनी दीदी स्त्री है! ना बाबा, ना।

नीरु

तो क्या है ?

रामू

मां...

नीरु

मां...हूं ऊं-ऊं...अब समझ में आया। मै भी कहूँ कि दीदी के भीतर यह गांठ कैसी है ? वह बराबर मां

बनने की कोशिश करती रहती हैं जबकि अभी उन्हें खुद मां की जरूरत है।

रामू

(चकित) क्या आ...(फिर सिर हिलाकर) बात अपनकू भी जंचती है।

नीरु

जंचनी ही चाहिये। जिसे प्यार मिला ही न हो वह देगा क्या। लेकिन हां, दीदी है कहां ?

रामू

अपन भी तो यही सोचता है।

(तभी अन्दर से अनीला और बाहर से सईदा आती हैं।)

अनीला

सईदा ! मैंने सब कागज देख लिये हैं, अब मरीजा को देखना है। चलो।

सईदा

लेकिन आपकी तबियत खराब है। उषा चाय ला रही है।

नीरु

दीदी, दीदी। ओह दीदी, नई मरीजा आपकी कोई...

अनीला

(तेजी से) सईदा ! नीरु को आज ही छुट्टी दे दी जाय।

सईदा

जी...

नीरु

दीदी, दीदी !

अनीला

(क्रुद्ध) मैं यह सब नहीं सह सकती। तुम लोगों को जो सुविधाएं दी गई है वे इसलिए नही कि तुम दूसरों के बारे में ऐसी वैसी बातें कहती फिरो। तुमसे किसने कहा कि...

नीरु

मै पगली हूं दीदी, पगली...मुझे माफ कर दो।

अनीला

तुम पगली नही हो, तुम्हें यह जगह आज ही छोड़ देनी होगी।

(तेजी से जाती है।)

नीरु

दीदी, दीदी !

(अनीला के पीछे-पीछे जाती है। सईदा भी। रामू ठिठकता है।)

रामू

अपन की कुछ समझ मे नही आया, यह नर्सिंग होम है, या चिड़ियाघर है, या पागलखाना है या थोड़ा-थोड़ा सब कुछ।

(जाता है और परदा गिरता है।)

दूसरा अंक

दृश्य १

सात दिन बाद

(रंगमंच पर डा० अनीला के घर का दफ्तर, लगभग पहले अंक के कमरे जैसा कमरा है। परन्तु यहां सब लोग सामने के बाईं ओर वाले द्वार से आते हैं। मंच पर बाईं ओर का दरवाजा रसोईघर में जाता है और दाईं ओर वाला शयनकक्ष में। चार्टों के स्थान पर चित्र हैं। एक महात्मा बुद्ध का, दूसरा गान्धी का। ऊपर एक तैलचित्र है जिसमें हिममण्डित गिरिश्रृंगों से घिरे बीहड़ पथ पर एकाकी मानव दृढ़ता से बढ़ा चला जा रहा है। दाईं ओर के द्वार से कुछ इधर एक सुन्दर सोफा सेट है। आसपास दो तिपाइयां हैं जिन पर एक-एक कलापूर्ण खिलौना रखा है। बीच में एक अपेक्षाकृत बड़ी तिपाई है जिस पर ताजे फूलों का गुलदस्ता रखा है। इसी दरवाजे के पास कारनिस है। उस पर एक पक्षी का कलापूर्ण जोड़ा है। उसके बीच मे एक नारी की प्रतिमा, जिसमें मूर्तिकार ने नारी के सौन्दर्य, मातृत्व और साहस को जीवन दिया है। एक ओर उसने शैशव की उंगली पकड़ी है, दूसरी ओर वह यौवन के कन्धे को दृढ़ता से सहारा दिये है। परदा उठता है और अनीला मेज पर बैठी बड़ी व्यस्तता से एक पुस्तक का अध्ययन कर रही है। बीच-बीच में गरदन उठा कर चारों ओर देखने लगती है। इसी बीच डा० सईदा वहां आती है।)

सईदा

अरे वाह ! आप अभी तक पढ़ रही हैं। कपड़े भी नहीं बदले।

अनीला

लेकिन बिचार बदल दिया है। मै अब नही जाऊंगी।

सईदा

पर डाक्टर केशव आपकी इन्तजार देखेगे।

अनीला

यह उनके लिए और भी अच्छा होगा।

सईदा

(मुस्करा कर) लेकिन इन्तजार की भी एक हद होती है।

अनीला

(मुस्करा कर) इन्तजार की कोई हद नही होती, सईदा ! हद होती है मंजिल की। अच्छा खैर, उनको टेलीफोन कर दिया है कि वह यहीं आ सकते हैं। और सुनो सईदा, मै बहुत जल्द वह आपरेशन कर डालना चाहती हूं। अगर्चे एक्सरे मे अभी कुछ नही आया लेकिन मुझे पक्का विश्वास है कि गाल ब्लेडर में पथरी है।

सईदा

लगता तो ऐसा ही है। बड़े खराब दौरे पड़ते हैं। बराबर उल्टियां होती है। कमजोर बहुत है। प्लूरेसी हो चुकी है न ?

अनीला

सो तो है लेकिन आज इन्ट्रावीनिस इन्जैक्शन देकर एक्सरे करना होगा। उससे सब कुछ स्पप्ट हो जायगा।

सईदा

वैसे दीदी! आपका क्या खयाल है ? ऐसी हालत में आपरेशन करना रिस्क (खतरा) लेना नही है ?

अनीला

मरीजा की जैसी क्रिटिकल हालत है उसमे आपरेशन कर देना ही अच्छा है। डाक्टर को रिस्क तो लेना ही पड़ता है।

सईदा

जानती हूँ, लेकिन आप क्या केवल डाक्टर हैं ?

अनीला

(हठात् चौंक कर) क्या, क्या मतलब ?

सईदा

कुछ नही। वह नीरु कहती थी कि यह मरीजा आपकी कोई परिचित है।

अनीला

(कांपती है फिर तलखी से कहती है) और तुमने उसकी बातों का विश्वास कर लिया।

सईदा

करना पड़ता है।

अनीला

क्यों ?

सईदा

क्योंकि जिस स्नेह और लगन से इन सात दिनों में आपने उसका इलाज किया है उससे...

अनीला

(हल्की मुस्कान) ओह, तुम मुझ पर तोहमत लगा रही हो। औरो का इलाज शायद मै इतने स्नेह से नहीं करती...

सईदा

(एकदम) नही, नहीं, यह बात नहीं । यह बात नहीं ! मुझे खेद है कि मैने बात को ठीक तरह नहीं कहा ।

अनीला

(हँस कर) अच्छा, अच्छा, दादा की कोई खबर आई ?

सईदा

नही तो, शायद अब की डाक में आई हो, देखती हूँ ।

(तेजी से जाती है। अनीला एक क्षण उस ओर देखती है, फुसफुसाती है।)

अनीला

(स्वगत) दादा के बारे मे कोई बात नही करना चाहता। सब मेरे बारे में बात करना चाहते है। मेरा और

मरीजा का...ओह। दादा ने यह किया क्या। (उत्तेजित होते हुए) यह क्या किया...

(दादा का प्रवेश, वही वेशभूषा, अनीला देख कर चौंकती है)

दादा !! आप...

(आगे बढ़ कर पैर छूती है।)

दादा

(पीछे हटते-हटते) अरे, अरे बीसवीं सदी में यह क्या करती है !

अनीला

कुछ करने के लिए काल का बन्धन नही होता, दादा !

दादा

(हँस कर) डाक्टर जब फिलौस्फर (दार्शनिक) बनने लगता है तो यमराज का काम बढ जाता है। खैर, नई मरीजा को देखा ? क्या विचार है ?

अनीला

(दादा को देखकर) मुझसे पूछते हो ?

दादा

मरीजा का हाल डाक्टर से ही पूछा जाता है।

अनीला

(व्यंग्य से) मैं डाक्टर कहां हूं ? डाक्टर आप है। मैं तो एक मशीन हूं।

दादा

लेकिन एक ऐसी मशीन जो टूटते जीवन को जोड़ने में विघाता से होड़ लेती है। जो मौत की छाया को जीवन की मुस्कान में बदल देती है।

अनीला

(तीव्र) लेकिन किसी के चलाने पर।

(तेज़ी से कह कर मुँह फेर लेती है।)

दादा

(उधर ही मुड़ कर) गुस्सा आ गया, अनीला। गुस्सा मत करो। मैं उसे बुलाने नही गया था।

अनीला

(एकदम तेज़) पर आपने उसे यहां भरती क्यों किया ?

दादा

क्योंकि वह बीमार थी और यह नर्सिंग होम बीमारों के लिए है।

अनीला

बीमारों के लिए है लेकिन दुश्मनों के लिए नहीं।

दादा

बीमार न दुश्मन होता है, न दोस्त। बीमार की कोई जाति नही होती।

अनीला

यह निरा शब्दों का जाल है। आप तो सिपाही हैं, आपको शब्दों से कब से मोह हुआ ? कब से...

दादा

जब से तुमने सिपाही पर सन्देह करना सीखा ! जानती हो एक इन्सान दूसरे इन्सान पर सन्देह क्यों करता है ?

अनीला

(तेजी से) मैं नही जानती। जानना भी नही चाहती।

दादा

लेकिन मैं बताना चाहता हूं।...वह अपने पाप पर, अपने विश्वासघात पर पर्दा डालना चाहता है।

अनीला

(तेज होकर) मैं पाप कर रही हूं, मैं विश्वासघात कर रही हूं ! किससे...

दादा

(तल्खी से) अपने कर्तव्य से, अपने फर्ज से। क्या डाक्टर का यह कर्तव्य नहीं है कि वह मरीज का इलाज करे ? जो डाक्टर ऐसा नही करता उसे तुम क्या कहोगी। बोलो...

अनीला

(तेजी से सोफे पर गिरकर) दादा...दादा...आप मुझ पर इल्जाम लगा रहे हैं। उल्टे मुझे...

दादा

(पास आकर) अनी ! तुम्हारे दर्द को पहचानता हूं। मै भी इन्सान हूं। एक बार मैंने भी उसे लौटा दिया था।

अनीला

(तलखी से) वह सब सुन चुकी हूँ।

दादा

फिर भी मुझे दोष देती हो ? मैंने तो यही सोच कर कि तुम्हे बुरा लगेगा उसे दाखिल कर लिया।

अनीला

(एकदम) आपको यकीन था कि आप उसे दाखिल न करते तो मुझे बुरा लगता ?

दादा

बेशक ! तुम डाक्टर हो और एक डाक्टर को अपने नर्सिंग होम की मान-मर्यादा से बढ़ कर और किसी चीज़ से प्यार नही होता।

अनीला

नर्सिंग होम. नर्सिंग होम.. (तिलमिलाती है, नारी की प्रतिमा के पास तक जाती है। फिर दादा की ओर मुड़कर पूछती है।) आपने उन्हे देखते ही पहचान लिया था ?

दादा

क्यों न पहचान लेता, लेकिन मैंने उसे अपने सामने आने का अवसर नही दिया।

अनीला

(व्यंग्य से) क्यों ?

दादा

क्योंकि मुझे डर था कि मैं उसे पिस्तौल का निशाना बना बैठता ।

अनीला

(एकदम तीव्र होकर) पिस्तौल का निशाना बना बैठते । आप पर इतनी बड़ी प्रतिक्रिया हुई और आप समझते कि मुझ पर कुछ भी असर न होगा ?

दादा

असर जिस पर नहीं होता वह पत्थर है परन्तु अनी ।

अनीला

ओह दादा तर्क...तर्क...मैं कहती हूँ...

दादा

ठहरो अनी । यह केवल तर्क की बात नहीं है । तुम्हें जितना जान पाया हूँ उससे मुझे विश्वास हो गया था कि तुम उसका इलाज करोगी । तुम कुछ और कर ही नहीं सकतीं ।

अनीला

(एकदम) मैं कहती हूं दादा । आप नहीं जानते, आप मुझे नहीं जानते । आपने...

दादा

मैं तुम्हें बहुत ग्रच्छी तरह जानता हूँ।

अनीला

(श्रौर भी तीव्र) नही, ग्राप बिल्कुल नही जानते। ग्राप नारी को नही जानते, ग्राप चोट खाई हुई नागन को नहीं जानते।

दादा

सब कुछ जानता हूँ। यह भी जानता हूँ कि नागन ज़हर है तो नारी स्नेह।

अनीला

लेकिन यही स्नेह जब उबलता है तो नागन का जहर उसके सामने चन्दा की शीतलता बन जाता है। ग्राप यह नही जानते। जानते होते तो कभी ऐसा न करते। ग्रोह ! पन्द्रह वर्ष तक ग्राप मेरे सम्बल बने रहे पर संकट के समय ग्रापने मुझे धोखा दिया, सागर की तूफानी लहरों में फेंक दिया। ग्रापने मुझे...

(सहसा दादा गुनगुना उठते हैं।)

दादा

किसी शायर ने क्या खूब कहा है:

खुदा से कह दो लंगर उठा ले ना,
मुझे ग्राज तूफ़ां की जिद देखनी है।

अनीला

(तिलमिला कर) नही, नही, नही करूंगी, मैं उसका इलाज नही करूगी। मैं उसे मार डालूंगी।

दादा

मार डालोगी ? सात दिन में तुमने उसका रूप पलट दिया है। उस लाश में जीवन डाल दिया है तुमने। उसे मारोगी ?

अनीला

हां, मार डालूंगी। यह सब आपके आने तक के लिए था। यह सब इसलिए था कि आपने...

(लीला का तेजी से प्रवेश)

लीला

मुझे अफसोस है डाक्टर...

अनीला

(तीव्र स्वर में) क्या बात है ?

लीला

मिसेज शर्मा को बड़ा तेज दौरा पड़ रहा है। बड़ा तेज दर्द है।

अनीला

(पूर्ववतः) बड़ा, बड़ा। बडा तेज दौरा है तो फिर तुम यहाँ क्यो आई ? डाक्टर सईदा से क्यों नहीं कहा ?

लीला

उन्होंने ही तो मुझे भेजा है।

अनीला

तो उनसे कह दो कि इस वक्त मै नही आ सकती।

लीला

लेकिन डाक्टर! उनकी हालत बड़ी खराब है।

अनीला

खराब है तो मै उसे ठीक नहीं कर सकती।

लीला

डाक्टर सईदा ने कहा है कि...

अनीला

(तीव्र होकर) मिस जोसेफ! जो कुछ मैने कहा क्या वह तुमने नही सुना। मै इस वक्त नही जा सकती। नही जाऊगी जाओ कह दो...

(लीला हैरान-परेशान मुड़ती है। दादा खूब जोर से हँसते है। अनीला तेजी से पुस्तक उठाती है, तभी तेजी से बदहवास गोपाल दौड़ा हुआ आता है।)

गोपाल

डाक्टर साहब! दीदी साहब! जल्दी चलिये, मेरी मां को बडी तकलीफ हो रही है। वह रो रही है (रो-सा पड़ता है) जल्दी चलिये।

अनीला

(परेशान) नही, नही, तुम्हारी माँ को कुछ नहीं होगा। डाक्टर सईदा वहाँ है, तुम जाओ।

गोपाल

नही, नही, उन्होने आपको बुलाया है। आप चलें, आपके बिना चले मेरी माँ ठीक नही हो सकती। आप चले, चले ना। पिताजी ने कहा था कि···(रो पड़ता है)

अनीला

(एक दम) ओह, परेशान कर दिया तुमने और तुम्हारे पिताजी ने। (जोर से चीखकर) चले जाओ यहाँ से, निकल जाओ···

(तेजी से गोपाल का हाथ पकड़े निकली चली जाती है। पीछे-पीछे लीला जाती है। दादा फिर जोर से हँस पड़ते हैं और उठते है।)

दादा

दुर्बल इन्सान! इसी दुर्बलता मे से दया, करुणा, परोपकार बड़े-बडे पुण्य कर्मो का जन्म हुआ है। इसी मे से यह पिस्तौल निकली है। मैं दुर्बल न होता तो भला पिस्तौल क्यों लिए रहता। दया, करुणा, परोपकार और पिस्तौल···, ज्योमेट्री की पुस्तक में देखना होगा कि उनकी रेखाये किस एंगल पर मिलती है···

(अट्टहास, फिर सहसा चौंक पड़ता है। काकी बोलती हुई आती है। साठ के लगभग आयु है। रोवदाव से बातें करती है।)

काकी

जब देखो नई मरीजा के पास, जब देखो नई मरीजा

की चर्चा। तुम जानो सात दिन से उसके पीछे पागल है।

दादा

काकी तुम जानो, वह डाक्टर है।

काकी

अरे मैं सब जानूं। पर तुम जानो मै डाक्टर-फाक्टर की बात न मानूं। भौत से डाक्टर आंख उठा के बी ना देखे। बोल्ले तो ऐसे जैसे भुक्खे भेडिये। तुम जानो, राम तुमारा भला करे, यो तो सुभाव की बात है। भगवान ने ऐसी मिट्टी से गढा है कि बस जो काम लेल्लिया वो काम तुम जानो करके ही छोड्डा।

दादा

तुम जानो काकी। वो तो अच्छी बात है। है ण।

काकी

(लम्बी सांस खींच कर) है तो पर तुम जानो दादा, काम जिबी होगा जिब सरीर साथ देग्गा। सरीर गिर गया तो तुम जानो डाक्टरी-फाक्टरी सब धरी ना रह जागी। मका दादा, एक बात पुच्छुं।

दादा

पुच्छो काकी।

काकी

(धीरे से) इस छोरे की सकल-सूरत हूबहू अपनो ससि से मिले है। वैसी ही आँखे, वैसा ही नाक-नकस, वो

ही आवाज, वो ही सुभाव। तुम जानो दादा, उसके आते ही उठके साथ होले। वड़ा प्यार है उससे मका।

दादा

प्यार तो उसे हर बच्चे से है। उनके लिये जान देती है।

काकी

सो तो है पर तुम जानो दादा, इससे तो हद्द है। मका, सच बताना, कौन है यह। तुम जानो ऊपर से सब ठीक है पर निच्चे ही निच्चे नरसिग होम में वड़ी चरचा है...

दादा

(उत्सुकता से) किस वात की चर्चा है ? क्या कहते है?

काकी

कहे है कि यह नई मरीजा जरूर दीदी की कोई ...तुम जानो...

(सहसा नीरु का प्रवेश)

नीरु

ओह दादा, आप आ गये। आप हमारे नक्षत्र-मण्डल के सूर्य हैं। आपके चारो ओर ही तो हम सब ग्रह घूमते है। आपके जाते ही नरसिग होम मे सब उलट-पुलट हो गया।

दादा

नीरु, तुम्हे अब छुट्टी देनी ही होगी। तुम्हे जानना चाहिए कि यह डाक्टर का नर्सिग होम है किसी फिलोस्फर का पागलखाना नही

नीरु

वाह दादा। फिलोस्फर तो आजकल आप बन रहे है। जब सिपाही ज्ञान बघारने लगता है तो सब कुछ उलट-पुलट हो जाता है जैसे कि यहां हो रहा है। सब काना-फूसी करने लगे है।

काकी

तुम जानो वही तो मै भी कह रही थी। दादा, इसका कुछ बन्दोबस्त होना चाहिए नही तो ... नही तो। अच्छा इब तो मै रसोई मे जाऊं हूं, फिर बताऊंगी।

(नीरु की तरफ इशारा करके अन्दर जाती है।)

नीरु

मै तो पागल हूं पर काकी ने बाल धूप में सफेद नही किये, दादा। यह नर्सिग होम मे अन्दर ही अन्दर बरफीला तूफान-सा कैसा उठ रहा है ? यह दीदी जो प्रशान्त महा-सागर की तरह शान्त रहती थी, रह-रह कर उसकी छाती ज्वालामुखी की तरह क्यों भभक उठती है ?

दादा

(तेज होकर एकदम) नक्षत्र-मण्डल का सूर्य, बर्फीला-तूफान, ज्वालामुखी, ओह तुम लोगों ने यह कैसा शब्दो का तूफान उठाया है। तुम लोग अपने-अपने घर क्यों नही जाते ?

नीरु

बीमार का घर नर्सिंग होम ही होता है।

दादा

लेकिन बीमार को यह अधिकार किसने दिया कि वह अपनी बीमारी का ध्यान छोड़ कर दूसरो की चिन्ता करे।

नीरु

(हँस कर) अपना दुख भुलाने के लिये दूसरों की चिन्ता करना इन्सान का स्वभाव है, फायदेमन्द जो है। है न दादा (जोर से हँसती है। दादा पिस्तौल पर हाथ रखते हैं) न न पिस्तौल को वही रहने दो। यह आपकी बुजदिली की निशानी है। ... मै आप से एक और बात कहती हूं। मरीज मैंने बहुत आते देखे है। उनमे खतरनाक भी होते हैं। रोना-पीटना भी होता है। नाटक भी होता है पर दीदी को मैंने कभी इस तरह बर्ताव करते नही देखा। कभी इस तरह बेचैन होते नही देखा, यह सब क्या है? यह नई मरीजा कौन है?

दादा

इंजिनियर श्री सतीशचन्द्र शर्मा की पत्नी और गोपाल की मां।

नीरु

दादा, मै सच्ची बात जानना चाहती हूं।

दादा

वह एक मरीजा है और इलाज के लिए डा० अनीला के नर्सिंग होम मे आई है, इसे तुम झूठी बात कैसे मानती हो। तुम्हें क्या अधिकार है कि तुम इससे अधिक जानने की कोशिश करो ? जाओ मै, कहता हूं जाओ अपने कमरे में (जोर देकर) मै कहता हू तुम अपने कमरे में चली जाओ, यहां से चली जाओ...

(तेजी से डा० सईदा का प्रवेश)

सईदा

ओह ! नीरु तुम फिर आ गई। तुम्हारी तबियत फिर खराब हो जाएगी।

दादा

यह उन लोगों मे से है जो जिन्दगी भर बीमार रहते है।

सईदा

रहते नही, रहना चाहते है। चलो नीरु...

नीरु

(जाते-जाते) जो आप ही बीमार है उन्हे पागलों की तरह सारी दुनिया बीमार नजर आती है। अच्छा, जाती हूं, पर दादा ! इससे बीमारी बढ़ेगी ही।

(हँसती हुई जाती है।)

दादा

क्यों डाक्टर ! क्या हाल है नई मरीजा का ?

सईदा

बहुत जल्द आपरेशन करना होगा ।

दादा

हालत क्या सचमुच बहुत खराब है ?

सईदा

जी, हा । आपरेशन न हुआ तो शायद काबू से बाहर हो जाय । अगर्चे एक्सरे में स्टोन नही आये है, फिर भी उनका ख्याल है कि गाल ब्लेडर मे स्टोन है, अभी इन्ट्रा-वीनिस इन्जैक्शन देकर दुबारा एक्सरे कर रहे है । उससे शायद तसदीक हो जाय ।

दादा

कुछ और तो नही है ।

सईदा

उम्मेद तो नही है । मुझे केन्सर का शक था, पर अब नही है ।

दादा

हूं, तो अनीला ने क्या सोचा है ?

सईदा

वही तो जल्दी से जल्दी आपरेशन कर देना चाहती हैं लेकिन…

दादा

लेकिन...क्या बात है ? कहो न ।

सईदा

दीदी की तबियत इधर बहुत खराब होती जा रही है ।

दादा

हां सईदा, मरीज जितना ठीक होता जा रहा है, डाक्टर उतना ही गिर रहा है ।

सईदा

ऊपर से वह जितने जोर से हँसती है भीतर उतने ही जोर से उबलती है ।

दादा

यह तो भगवान की प्यारी दुनिया का नियम है, लेकिन खैर गनीमत यही है कि उसने आत्म-हत्या नहीं कर ली है ।

सईदा

शायद इसलिये कि वह हत्या करना चाहती है ।

दादा

(चौंक कर) क्या कहा ? (सम्भल कर) जान पडता है सईदा ! तुम्हारी आखे काफी गहराई तक देख सकती है ।

सईदा

डाक्टर की आखे होती ही इसलिये है लेकिन यह मरीजा कौन है ?

दादा

इन्जिनियर सतीशचन्द्र की पत्नी। गोपाल की मां, एक मरीजा जो इस नर्सिग होम मे ठीक होने के लिए आई है और ठीक होकर जाएगी।

सईदा

आपको यकीन है।

दादा

एक दिन देखोगी। तब तक कहता हूं कि घाव को कुरेदो नही, उस पर मरहम लगाओ।

सईदा

लेकिन जब तक घाव को कुरेदकर साफ़ न कर दिया जाय तब तक मरहम काम नही करता।

दादा

जानता हू, पर वह काम मुझ पर छोड़ दो। तुम लोगो के साथ रहते-रहते इतना तो सीख ही गया हूँ।

सईदा

बहुत अच्छा। बहुत अच्छा, अब कुछ न पूछूंगी। (तेजी से जाती है फिर मुड़ती है) दादा ! एनसथीसिया के लिये दीदी ने डाक्टर केशव को ही बुलाया है !

दादा

(चौंक कर) क्या ? (फिर एकदम सम्भल कर हँस पड़ते है) अच्छा है, अच्छा ही है। आदम के आ जाने पर मैं घाव

कुरेदने के कड़वे काम से बच जाऊँगा। तुमने अच्छी खबर दी। बहुत अच्छी खबर।

(सईदा मुस्कराती हुई जाती है। दादा घमते हुए फुसफुसाते हैं।)

दादा

काश कि अनीला शादी कर ले। काश कि यह घटना...

(तभी तेजी से अनीला का प्रवेश। हाथ मे एक पत्र है। वह दादा को नहीं देखती जो अब रसोईघर के द्वार से अन्दर जाने को है। सोफे पर गिरती पड़ती है।)

अनीला

ओह, ओह, किसी तरह, किसी तरह मै इस भूचाल से बच सकती।

दादा

(मुड़ कर) भूचाल से बचना चाहती हो अनी। (जोर से हँसता है) है इतना साहस!

अनीला

ओह दादा! आप अभी यही है?

दादा

जल्दी ही जा रहा हूँ पर अनी, तुम इतनी बेचैन क्यों हो?

अनीला

दादा! मै यह आपरेशन करना नही चाहती।

दादा

क्यों नही करना चाहती ?

अनीला

क्योंकि मुझे डर है कि मै उसे मार डालूगी।

दादा

(कठोर स्वर) तुम उस डर को जीत नहीं सकती। पन्द्रह साल तक क्या तुम पानी पर लिखती रही हो ? क्या साधना के नाम पर तुमने वालू का महल खड़ाकिया है ?

अनीला

हां दादा, पन्द्रह साल तक मै कच्चे घड़े में पानी भरती रही। जो कुछ मैने सीखा वह सूखी जमीन पर तैरने के समान था। इसीलिये मेरे तप की आग मुझे ही भस्म कर रही है। यह पत्र तो पढ़ो...

(पत्र फेंक देती है। दादा उठा कर सहसा पढ़ जाते हैं।)

दादा

(पढ़ते हुए)

आदरणीया।

वहुत आशा लेकर लिख रहा हूं। डाक्टर से कुछ परदा नहीं होता। कहने को मै एक वहुत वडा अफसर हूं पर वास्तव मे एक अदना इन्सान हूं, वह इन्सान जो अपने वीवी-वच्चों को प्यार करता है, वेइन्तहा प्यार करता है।

मेरी बीवी आपके नर्सिंग होम में है, आपकी शरण में है। कैसी है, आप जानती है। मै तो सिर्फ इतना जानता हूँ कि केवल आप ही उसे जिन्दा रख सकती है, आप ही हम सबको बचा सकती हैं। उसका बचना मेरा बचना है, मेरे बच्चों का बचना है।

आप पैसे की चिन्ता न करे। मेरा सब कुछ उस पर न्यौछावर है। वह बच गई तो मै भीख मांग कर भी गुजारा कर लूंगा। आपने अब तक जो कुछ किया है उसने मुझे आशा से भर दिया है। मेरा बच्चा तो आपके गुण गाता रहता है। मुझे पूरा विश्वास है कि आपको सफलता मिलेगी। आप जैसों के सहारे ही भगवान की दुनिया चलती है।

आपका विनम्र,
सतीशचन्द्र शर्मा

(पढ़कर दादा हर्ष से लगभग चीख उठते है)

वाह वा शानदार, एकदम शानदार, यह तो तुम्हारी जीत है। ऐसी जीत जो किसी को मिली न मिलेगी...

अनीला

(उसी तरह चीखकर) लेकिन दादा, मै ऐसी जीत नही चाहती। मै पागल हो जाऊंगी मै ··

दादा

वह मै सब कुछ जानता हूँ परन्तु···

अनीला

परन्तु मुझे उसे भूल जाना चाहिये ।

दादा

इन्सान कभी कुछ नही भूलता । मै भूलने के लिए नहीं कहता ।

अनीला

फिर क्या करने के लिए कहते हो ।

दादा

बदला लेने के लिए ।

अनीला

क्या ! क्या मै बदला लूँ ? मै उसे मार डालूँ । उसकी हत्या कर दूँ ।

दादा

मारना ! हत्या करना !! आज की दुनिया की तरह तुम भी यही सोचती हो कि बदला लेने का केवल एक ही रास्ता है—हत्या करना । लेकिन मै कहता हूं कि हत्या करना बदला लेना नही है, हर्गिज नही है ।

अनीला

तो क्या जिन्दगी देना बदला लेना है...

दादा

क्या तुम समझती हो कि तुम जिन्दगी दे सकती हो ?

अनीला

ओह, तो क्या करने को कहते हो ।

दादा

अपना काम। तुम डाक्टर हो और तुम्हारा काम है आपरेशन करना।

अनीला

वह मैं नही करूँगी। कभी नही करूँगी। मैं उसे मार डालूँगी। मै उसे मार डालूँगी।

दादा

यानी तुम आत्महत्या करोगी।

अनीला

आप इसे किसी नाम से पुकार सकते है। हत्या, हत्या रहेगी।

दादा

अनीला ! तुम बीमार हो...

अनीला

मै बीमार नही हूं।

दादा

(दृढ़) तुम बीमार हो।

अनीला

नही, नही।

दादा

आदमी शब्दों की भाषा जानता है, उसके पीछे सचाई को छिपा सकता है लेकिन आखों की भाषा में झूठ के लिए

कोई जगह नही है। इस समय तुम्हारी हालत ऐसी है कि तुम मेरी पिस्तौल लेकर मरीजा को, उसके वेटे को, उसके पति को, मुझे और अपने आपको, सबको मार सकती हो।

अनीला

दादा, आप ऐसा कैसे कह सकते हैं। आप इतने कठोर कैसे हो सकते है।

दादा

डाक्टर होकर ऐसा प्रश्न पूछती हो। कठोर हुए बिना क्या घाव कुरेदा जा सकता है।(पास आकर) पर मैं एक वात नही समझ पाया।

अनीला

क्या ?

दादा

यही कि इस आकाश के नीचे सबके रहने के लिए जगह है, लेकिन फिर भी न जाने क्यों हम अपनी जगह छिन जाने के डर से मरने-मारने को तैयार रहते हैं।

अनीला

मुझे क्या पता क्यो तैयार रहते है ? क्यों ऐसा होता है ?

दादा

क्योकि हम कायर हैं। तुम भी कायर हो।

अनीला

मैं कायर हूँ...

दादा

(तेज स्वर) हाँ, तुम कायर हो ! तुम भूल गईं कि तुम डाक्टर हो । तुम भूल गईं कि डाक्टर एक सिपाही है । तुम भूल गई कि सिपाही का एक ही काम होता है—जय पाना । (पास आकर) मुझे देखो । मैं मानता हूँ कि हथियारो का इस्तेमाल आत्महत्या है परन्तु युद्ध-भूमि मे इनका इस्तेमाल करके मैंने कितने ही पदक पाये हैं । (घूमता हुआ) वहां मै भूल जाता था कि मैं आत्महत्या कर रहा हू । वहाँ मुझे एक ही बात याद रहती थी कि मै सिपाही हू और मेरा काम है—जय पाना ।

अनीला

हो सकता है । लेकिन दादा ! आप यह क्यो भूल जाते है कि मैं डाक्टर होने से पहले एक इन्सान हूँ ।

दादा

इन्सान डाक्टर से भी बड़ा है । वह सबसे बडा है ।

(लीला का प्रवेश)

लीला

डाक्टर ! मिस्टर शर्मा आपसे मिलना चाहते है ।

अनीला

कौन शर्मा ?

दादा

(एकदम) कौन मिलना चाहता है ?

लीला

वही नई मरीजा के शौहर इन्जीनियर साहब ।

दादा

उनसे कह दो कि डा० सईदा से मिले ।

लीला

कहा था...

दादा

कहा था तो उसे मानना पड़ेगा । डा० अनीला बीमार हैं ।

लीला

लेकिन वह उन्ही से मिलने आये है । आज ही उन्हें वापिस लौटना है ।

दादा

तुम उनकी वकील हो या नर्सिंग होम की नर्स ।

लीला

जी अच्छा । अच्छा, मै कह दूंगी । (जाती है)

दादा

(मुड़कर) अच्छा अनीला ! मैं भी चला, लेकिन याद रखना तुम कायर नही हो सकती ।

अनीला

मैं कायर नही हूं। होती तो क्या आज डाक्टर बनने को जीवित रहती।

दादा

(मुस्कराकर पास आते हुए) अनीला! डाक्टर तुम केवल इसलिये नही बनी कि तुम बहादुर थी।

अनीला

तो और किस लिये ?

दादा

वह तुम जानती हो।

अनीला

(कांप कर) दादा !!

दादा

घबराओ नहीं। तुमने डा० केशव को बुला भेजा है। उससे बढकर कुशल एनसथैटिस्ट और कोई नही है। मैं अब जल्दी नर्सिंग होम में नही आऊंगा।

(कह कर तेजी से बाहर जाते हैं, अनीला तेजी से उठती है, पीछे जाती है।)

अनीला

दादा, दादा, सुनो तो (बाहर जाने को होती है पर लौट आती है। सोफे पर लुढ़क जाती है। दो क्षण वैसे ही पड़ी रहती है। फिर फुसफुसा उठती है।) केशव ! डाक्टर केशव ! दादा सब

कुछ जानते है । यह कैसी विचित्र बात है कि कुछ बातें मै दादा से साफ-साफ नहीं कह सकती पर डा० केशव से कह देती हू । कुछ भी नही छिपा पाती । दादा अपने है पर केशव तो जैसे...

(काकी का प्रवेश)

काकी

तुम जानो बड़ी मुस्किल से रोका है ।

अनीला

किसे रोका है काकी ?

काकी

अरे उसी शर्माजी को । तुम जानो अन्दर ना भागें आवे थे । लीला ने जिब कहा कि डाक्टर को बुखार आ गया है तुम जानो तब कही गये ।

अनीला

गये ।

काकी

हां, अगले अफ्ते आन कूं कह गये है । तुम जानो, मका क्यूँ बेटी । तबियत क्या सच्चो ही खराब है ।

अनीला

(कांप कर) हां, हां, काकी । पेट मे बहोत तेज दर्द है । जरा पानी गरम करो न, सेकूंगी । चलो, मै अभी आई ।

काकी

(जाती-जाती) हां, हां, आ न। तुम जानो सिर सहलाये भी कई दिन हो गये। जरा और सा जी होगा। और दिके वह छोरा आया तो उठके चल न देना। मकां तुम जानो हाँ...

अनीला

ना, ना, मैं वस आ रही हूं। तुम चलो।

(काकी जाती है कि लीला आती है।)

लीला

डाक्टर, मिस्टर शर्मा गये।

अनीला

हाँ, मैने सुन लिया। तुमने ठीक किया। शाबाश...

(लीला खड़ी रहती है)

कुछ कहना है ?

लीला

नही तो...वैसे ही...

अनीला

कहो, कहो, क्या कहना है ?

लीला

(एक दम) माफ करिये, मै एक नर्स हूं पर आपके प्यार के भरोसे हिम्मत कर रही हूं।

अनीला

किस बात की ?

लीला

आपसे एक बात कहने की ।

अनीला

बोलो, तुम्हें क्या चाहिए ।

लीला

(एक दम) डाक्टर ! आपकी तबियत बड़ी खराब है । आप वह आपरेशन न करे ।

अनीला

(कांप कर) क्या...क्या कहा ?

लीला

कम से कम कुछ दिन रुक जायें या फिर किसी दूसरे डाक्टर को बुलवा ले ।

अनीला

(सम्भल जाती है, मुस्कराती है) लीला ।

लीला

जी हाँ ।

अनीला

तुम मुझे प्यार करती हो न ।

लीला

आपको कौन प्यार नही करता ।

अनीला

मुझे तुम्हारे प्यार का भरोसा है । जाओ, परसों वह आपरेशन होगा और तुम मेरे साथ रहोगी ।

नीला

दीदी !

अनीला

न, न, करुणा नहीं। करुणा डाक्टर की दुश्मन है और फिर तुम तो सदा हँसने वाली हो। सोचने लगोगी तो यह धूप जैसी हँसी मुरझा जायगी। जाओ प्यारी लीला, मरीजा का ध्यान रखो। और हाँ, दूसरे लोगों को उस बात का पता नही होना चाहिये।

लीला

अच्छा दीदी। अच्छा...

(जाती है। अनीला उठती है)

अनीला

सभी मुझसे सहानुभूति दिखाने लगे। सभी...ऊंह...

(रामू का प्रवेश। दोनों हाथों में डलिया थामे है।)

रामू

दीदी ?

अनीला

क्या है रे।

रामू

जी वह शर्मा साहेब है न। अपनकू पकड़ कर बोला कि ये डलियां डाक्टर साहब को देगा।

अनीला

क्यों देगा, समझा नही।

रामू

शर्मा साहेव कलकत्ता से लाया है। एक में रसगोल्ला के डिब्बे है, दूसरे मे केला, सन्तरा, अनानास के...

अनीला

(एकदम भड़क उठती है) ये सव चीजे तुम यहां क्यों लाये। कैसे हिम्मत हुई तुम्हारी; क्या तुम नही जानते...

रामू

जी अपनकूं सव पता। अपनने वोल दिया था पर अव तो यहां सव उलट-पलट हो गिया है। फिर गोपाल वावा वोला...

अनीला

बहस किये जाता है बेवकूफ। मैं कहती हूं ले जाओ सव। ले जाओ मेरे सामने से...

रामू

अभी ले जाता डाक्टर साहव। अभी ... गलती हो गया। माफी देगा। अपनने सोचा दीदी गोपाल बाबाकू इतना प्यार देता इसीलिये...

अनीला

फिर वही वकवास किये जा रहा है। कल को कोई रुपया-पैसा देगा, कुछ और देगा तो तू ले आयगा ? तुझे शर्म नही आई। मै कहती हूं तू जाता क्यो नही। निकल यहां से और खवरदार जो फिर यहां देखा। गोपाल... गोपाल...

रामू

दोहाई दीदी। जायगा, अभी जायगा।

(रामू कांपता हुआ भागता है। उतनी ही तेजी से लीला आती है।)

लीला

डाक्टर! आपका तार।

अनीला

किसका तार?

लीला

डा० केशव का। शशि...

अनीला

(एकदम) शशि...शशि को क्या हुआ? (तेजी से तार पढ़ती है) पैर फिसल जाने के कारण शशि गिर पड़ी। दाहिने पैर की हड्डी टूट गई। प्लास्टर हो गया है। चिन्ता की कोई बात नही। मैं आ रहा हूं। (बैठकर) हड्डी टूट गई। ओह...

(तेजी से काकी, नीरु, सईदा का घबराये हुए प्रवेश)

सईदा

क्या हुआ दीदी?

नीरु

शशि कैसे गिरी। कैसे?

काकी

क्या हुआ शशि को, बेट्टी ! तुम जानो क्या हुआ, बता तो ।

अनीला

(एकदम स्वस्थ होकर) कुछ नहीं । गिर जाने के कारण शशि के दाहिने पैर की हड्डी टूट गई है । प्लास्टर हो गया है । कुछ दिन में ठीक हो जायगी ।

सईदा

तार किसका है ?

अनीला

डाक्टर केशव का ।

नीरु

दीदी, आपको जाना चाहिये

लीला

हां, आप चली जायं ।

काकी

हां, हां, जा बेट्टी । तुम जानो हो सके तो यहीं ले आ ।

सईदा

लाना तो शायद ठीक न रहेगा पर आप जायं जरूर...

अनीला

(एकदम दृढ़ स्वर) जाने की जरूरत नही है। सईदा! मैं कल ही आपरेशन कर देना चाहती हू।

सईदा

पर डाक्टर...

अनीला

ठीक है सईदा... (जाते हुए मुड़ती है) और हा, उन लोगों से कह दो कि गोपाल को अब यहा न रखे। (काकी से) आओ काकी। मै कुछ देर लेटूंगी। (जाती है)

लीला

डाक्टर दीदी बडी विचित्र है...

नीरु

कुछ आदमी बड़े जटिल होते है मिस जोसेफ! कोई कमी होती है जो उन्हे वज्र जैसा कठोर और सीमेंट जैसा मजबूत बना देती है।

सईदा

कुछ क्या, अक्सर इन्सान ऐसे ही होते है। किसी कमी के कारण वे बडे-बड़े काम कर जाते है।

(जाती है)

नीरु

क्या कहा ? अक्सर ऐसे ही होते हैं। सच होते तो है। सच तुम तो मुझसे भी ज्यादा जानती हो। (जाती है) ठहरो डाक्टर, ठहरो, तुम तो ज्ञानी हो...

लीला

(जोर से हँसती है) ज्ञान, ज्ञान, कोरे ज्ञान के मारे आदमी पागल हो रहा है। (जाती है)

(परदा)

दृश्य दूसरा

(दूसरे दिन बहुत सवेरे)

(पहले दृश्य वाला स्थान, वही रूप-रंग। समय रात के अन्तिम पहर का है। चारो ओर पूर्ण निस्तब्धता है। परदा जब उठता है तो वहां पूर्ण अन्धकार दिखाई देता है। सब कुछ अन्धकार में छिपा हुआ है। फिर धीरे-धीरे अन्धकार धुँधलाता है। कुरसी गिरने की आहट होती है। फिर सहसा बिजली जल उठती है। मच पर हाथ में एक मोटी-सी पुस्तक लिए हुए डा० अनीला दिखाई देती है। बेहद थकी हुई, त्रस्त जैसा अपना ही भूत हो, जैसे गहरी नींद में जाग उठी हो। आकर सोफे पर बैठ जाती है। कई क्षण हाथों में सिर पकड़े बैठी रहती है। फिर अपने आप से बोल उठती है।)

अनीला

आखिर आपरेशन करना ही होगा, पर मै वह आपरेशन नहीं करूँगी। नही करूँगी।...लेकिन सब इन्तजाम हो चुका है। सबको मालूम है कि आज आपरेशन होना है। क्या कहेगे?.. कुछ भी कहे मै आपरेशन नहीं करूँगी...लेकिन...(एकदम गिर जाती है) ओह मै क्या करूँ... मै क्या करूँ...

(सहसा एक आवाज[1] गूँजती।)

आवाज

करती क्या, भाग जाओ।

(अनीला कांप कर उठती है, चारों ओर देखती है।)

अनीला

कौन! कौन है! कौन बोलता है?

(दूर पहरुए की आवाज गूँजती है।)

पहरुआ

खबरदार होशियार, पाच बज गये है। खबरदार होशियार...

(अनीला एकदम चौंकती है)

---

१. यदि मच पर आवाज का होना उचित व सम्भव न हो तो डा० अनीला का अन्र्द्वन्द्व अभिनय द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। अगर्चे यह योजना पुरानी हो गई है फिर भी अन्तर्द्वन्द्व की सघनता के लिए इसका उपयोग हो ही सकता है।

अनीला

ओह पहरुआ था। मैने समझा...

(बैठ जाती है। आवाज फिर गूंजती है)

आवाज

तुमने खाक समझा। यह पहरुए की आवाज नही है।

अनीला

तो किसकी है ?

आवाज

अपने अन्दर झाको, अपने को टटोलो, तुम्हें पता लगेगा कि यह आवाज तुम्हारी है।

(अनीला फिर कांपती है)

अनीला

मेरी आवाज। यह मेरी आवाज है, यानी मैं बोली थी। मै भागजाना चाहती हूं। मै...मै...(एकदम तेज होकर) क्या वाहियात बात है। डाक्टर होकर मै इतनी कायर होती जा रही हूं। नही, नही, मै कायर नही हूं, मुझे वह आपरेशन करना है। अवश्य करना है। कोई बात है।

(तेजी से उठकर पुस्तकों की आलमारी के पास आती है, एक पुस्तक निकालकर लाती है। मेज पर बैठकर बड़े ध्यान से पढ़ती है। दो क्षण के लिए उसमें डूब जाती है। तभी रामू आता है, हाथ में बुहारी और झाड़न है। उसे देखकर अनीला पुकारती है।)

अनीला

रामू, इधर आओ।

रामू

(पास आकर) अपनकू बोला, दीदी।

अनीला

हां, कल वे चीजें वापिस दे आये थे।

रामू

जी देगां क्यों नहीं, पण...

अनीला

पण क्या ?

रामू

पण आधा देगां और आधा...

अनीला

आधा ?

रामू

आधा अपनके पेट मे खलास हो गया।

अनीला

क्या आधी चीजें तुम खा गये ?

रामू

हां दीदी, अपनने सोचा कि दीदी गुस्सा में है। गोपाल बाबा पूछेगा तो क्या कहेगा। हम जब लौटाने कूं

गया तो बाबा ने पूछा—डाक्टर दीदी ने नही लिया। हमने बोला—लिया क्यूं नही। खूब मजे से खाया।

अनीला

क्या! क्या बोलता है रे?

रामू

सच बोलता दीदी। बीमारी की कसम सच बोलता। हमने कभी झूठ बोला? बोलता तो बीमार न हो जाता। गोपाल के डर से हमने आधी चीजे लौटाया, आधी को बोला आपने खाया।

अनीला

(क्रोध में चीखकर) क्या, क्या मैने खाया?

रामू

दोहाई दीदी, दोहाई दीदी की। सारी लौटाता तो गोपाल बाबा कू दुख होता। वह आपकू परेशान करता। आपकू परेशानी से बचाने कू··

अनीला

(चीखकर) रामू···(एकदम शांत) ओह रामू·· तू भी मुझ पर···रामू, तू भी मुझ पर· (फिर सहसा खो जाती है।)

रामू

अपनको यही सूझा। इससे गोपाल बाबा भी खुश हुआ और आपकी बात भी रह गया। सब मुसीबत अपनके पेट को हुई। पण मुसीबत भी क्या?

खाली था भर गया। दीदी आप तो गोपाल बाबा कूं खूब प्यार करता। हर बाबा को प्यार करता। इसीलिए अपनने दीदी…(देखकर) दीदी…दीदी…

अनीला

(एकदम जाग कर) रामू, एक काम करेगा।

रामू

क्यों नही करेगा। एक नहीं, एक हजार करेगा। आपके लिये…

अनीला

जल्दी जाकर एक टैक्सी ले आ।

रामू

जी, अभी।

अनीला

हां, अभी।

(जाता है, दरवाजे पर पहुंचते ही अनीला पुकारती है।)

अनीला

अच्छा, अच्छा, अभी रुको। देखो...

रामू

जी।

अनीला

नही, जाओ, जल्दी लेकर आना।

(वह मुड़ता है, फिर पुकारती है)

अनीला

रामू !

रामू

(पास आकर) जी ।

अनीला

कुछ नही, कुछ नही, जाओ । हां, यह देखो । आकर यह तार दे देना। लिख कर रख जाऊंगी । (रामू ठिठकता है) जाओ बाबा, मुँह क्या देखते हो । जल्दी जाओ ।

(रामू जाता है । अनीला बैठ कर तेजी से तार लिखती है, पढ़ती है ।)

"सन्ध्या तक पहुंच रही हूं ।" ठीक है, हवाई जहाज से जाऊंगी (फिर सोच में पड़ जाती है) ठीक है न । मैने ठीक किया न । मुझे जाना ही चाहिए। रह गई तो मुझे विश्वास है कि मै उसे मार डालूंगी । जरूर मार डालूंगी । मुझे इस हत्या से अपने को बचाना ही चाहिए । अब तो अच्छा बहाना है । शशि के चोट लगी है । मै हत्या नहीं करना चाहती । मै चली जाऊँगी । डा० केशव आ ही रहे है । सईदा आपरेशन कर देगी और...

(बोलते-बोलते तेजी से अन्दर जाती है । दो क्षण में कुछ सामान लेकर आती है और बाहर भागी चली जाती है । एक क्षण बाद टैक्सी का हार्न सुनाई देता है । फिर रामू अन्दर आता है ।)

रामू

कहां है तार ? (तार उठाता है) अपन दीदी कूं समझ नही पाता । एकदम बदल गया। हमने समझा हमकूं मार पड़ेगा पर दीदी बोला भी नही । है न, बदल गया है न । अच्छा तार दे जाऊं पर पहले जरा झाड़ - बुहार तो लूं ।

(झाड़ना शुरू करता है । तभी नीरु आती है ।)

नीरु

ओह रामू ! दीदी कहां है ?

रामू

अपनकूं कुछ मालूम नहीं ।

नीरु

मालूम नही (हँसती है) तू भी बदल गया है रे । क्या बात है ?

रामू

आपकू क्या दरकार है । अपने कमरे मे जाओ । हम जो चाहेंगा करेगा । जाओ यहां से, जाओ बाबा । नही तो ...

नीरु

तूफान, तूफान आने वाला है ।

रामू

चुप रह । तू खुद तूफान है, कयामत है, भूचाल है...

(लीला का प्रवेश)

लीला

डाक्टर दीदी ! डाक्टर दीदी !

नीरु

दीदी यहां नहीं है।

लीला

कहां है ? कहां गई रामू ?

रामू

अपनकू कुछ मालूम नही हैगा।

लीला

मालूम नहीं है। उधर मरीजा को फिर बड़ा तेज दौरा पड़ा है। (तेजी से जाती है) आये तो कह देना।

नीरु

(हँसती है) रामू ! सच बोलना रे। तेरे को कुछ पता नही।

रामू

(चीख कर) नही, नही, नही, हजार वार नही।

नीरु

तीन हजार वार वोला, तब ठीक है। तुझे पता है। (जाती है) कोई डर नहीं, कोई डर नहीं।

रामू

अपनकू भाग जाना चाहिए। इस नर्सिग होम में सब वीमार हो गया। मौत को सुई लगा-लगा कर जिन्दा

करता रहता है, तभी इस नीम के माफिक लाल घूमता है। हमेशा बोलना, बोलना। तुम्हें पता है, है पता, करेगा कुछ, फांसी देगा। है, हम चढ़ जायेगा उतरेगा ही नहीं। चाहे जान भले ही निकल जाये।

(तेजी से डाक्टर सईदा का प्रवेश)

सईदा

क्यों रामू ! दीदी कहां गई ?

रामू

अपनी बेटी के पास।

सईदा

क्या ? दीदी दादा के पास गई, बिना कुछ कहे।

रामू

हमको बोल गया कि [illegible] है।

सईदा

क्या ?

रामू

कि हम [illegible] नहीं [illegible]।

सईदा

तो कौन [illegible] ?

रामू

आप और [illegible]।

सईदा

डा० केशव । (क्षणिक अवकाश, चेहरा चमक उठता है) यह तो अच्छा हुआ, बहुत अच्छा । (बैठती है) ... वह कब गई ?

रामू

अभी सवेरे ।

सईदा

इतने सवेरे । अभी तो कोई गाड़ी नहीं जाती ।

रामू

हवाई जहाज से जाएगी, ऐसा हमको बोला था ।

सईदा

और कुछ बोला ।

रामू

बोला डा० सईदा सब कुछ जानता है । हम अब दो हफ्ते नही आयगा ।

सईदा

दो हफ्ते ।

रामू

जी हाँ ।

(सईदा सोफे पर बैठ कर एक क्षण शून्य में ताकती है, फिर बोल उठती है ।)

सईदा

तो आखिर दीदी चली ही गई । अच्छा हुआ, बहुत

अच्छा हुआ जो चली गई। उन्हें बहुत पहले चले जाना चाहिये था...

(नीरु का बोलते-बोलते प्रवेश)

नीरु

मै कहती हूँ दीदी लौट आयँगी। जरूर लौट आयँगी।

सईदा

ओह नीरु, नीरु तुम हमेशा आयँ-शांय बकती रहती हो। जाओ यहां से।

नीरु

मै गई तो फिर लौट कर नही आऊंगी।

सईदा

तो कोई आसमान नही गिर पड़ेगा। क्या मुसीबत है, टिड्डा अपनी टांगे इसीलिये ऊपर किये रहता है कि आसमान गिरे तो अपनी टागों पर रोक लेगा। जाओ, मै कहती हूं, जाओ।

नीरु

जाती हूँ डाक्टर, जाती हूँ, इतना शोर मत मचाओ। टिड्डा आसमान को रोके या न रोके पर रोकने का रास्ता

तो दिखाता ही है। मै कहती हूँ कुछ नही होगा, कुछ नहीं होगा।

(उसी समय डाक्टर केशव का प्रवेश। सुन्दर स्वस्थ, आयु ४३-४४, पर लगते हैं ३०-३२ के लगभग। मुख पर दृढ़ता, आंखों में स्नेह, मुस्काते आते हैं, नीरु से टकरा जाते हैं।)

केशव

हैलो नीरु! तुम अभी तक यही हो।

नीरु

ओ हो, हो, डाक्टर साहब, नमस्ते। जी हां, मै तो हूँ पर वैसे मरीज बहुत कम रह गये है।

केशव

सो तो देख रहा हूं सब डाक्टर बन गये हैं। डा० अनीला के पत्र से पता लगा कि वह बेहद बीमार है। और डा० सईदा पीली पड़ गई है।

(सईदा तब तक उठकर पास आती है।)

सईदा

आदाब अर्ज, डाक्टर केशव।

केशव

आदाब अर्ज, मैने कहा क्या बात है? (रामू से) रामू! मेरा सामान तो देखो। (रामू जाता है। केशव बैठ जाते हैं।) हाँ, सुना है कि कोई नई मरीजा आई है।

सईदा

मरीजा क्या है मौत की छाया है। नर्सिंग होम में सीलन छा गई है।

केशव

क्यों ? आखिर वह मरीजा है कौन ?

सईदा

हम तो इतना ही जानते है कि वह आसाम से आये हुए, अब पूना में लगे हुए, झांसी निवासी इन्जीनियर सतीशचन्द्र शर्मा की पत्नी है। बाकी जानती है डा० अनीला।

केशव

अनीला कहाँ है ?

सईदा

अभी सवेरे हवाई जहाज से शशि के पास चली गई।

केशव

क्या ! मुझे तो यहाँ बुलाया। उस मरीजा का आपरेशन होने वाला है।

सईदा

जी हाँ, सब तैयारी है, पर वह कह गई हैं कि वह आपरेशन अब आपकी मदद से मै ही करूं।

केशव

पर क्यों ! क्या हुआ ? बात क्या है ?

सईदा

बात ही तो कोई नही जानता।

नीरु

मै जानती हूँ।

केशव

क्या ?

नीरु

नई मरीजा दीदी की कोई...(हँस पड़ती है) नहीं तो कोई इतने प्यार से सेवा करता है।

केशव

लेकिन जो प्यार करता है वह ऐन वक्त पर इस तरह भाग नही जाता है।

नीरु

भागा प्यार मे ही जाता है, डाक्टर। अपने हाथों बुरा न हो जाय यही डर उसे खा जाता है।

केशव

शायद ! क्यों डा० सईदा आप कुछ जानती हैं।

सईदा

जानती नही, जानना चाहती हूं। आप शायद जानते हो।

केशव

मै.. मै तो इतना ही जानता हूँ कि डा० अनीला ने मुझे बुलाया था लेकिन यह नही कहा था कि वह चली

जाएंगी। (हाथ हिला कर) बहरहाल, चिन्ता की कोई बात नहीं, मै मरीजा को देखना चाहूँगा।

सईदा

अभी।

केशव

शुभस्य शीघ्रं। नेक काम मे देरी क्यो?

(सईदा हँस पड़ती है)

सईदा

आप तो डाक्टर बस...

केशव

मैंने कुछ गलत कहा? और गलत भी हो तो बुरा नहीं है, आप हँसी तो सही। सच्ची बात पर आदमी कभी नहीं हँसता।

सईदा

डाक्टरी पेशे वालो को तो हमेशा ही हँसना-मुस्काना पड़ता है, डाक्टर। वह उनकी दूकान का ट्रेडमार्क जो है।

केशव

ट्रेडमार्क (हँसता है) आपने कहा खूब। अन्दर बेशक क्रोध का तूफान उठता हो, दर्द तिलमिलाता हो, आंसुओं की बाढ़ आ रही हो पर, डाक्टर को मुस्कराना ही चाहिए। काश कि अनीला इस बात को समझ पाती।

(सहसा अनीला का प्रवेश)

अनीला

समझती है। अनीला भी इस बात को समझती है।

(सब सहसा कांपते हैं)

नीरु

दीदी आ गई, दीदी आ गई।

(तेजी से जाती है)

केशव

(चकित) अनीला तुम ! तुम तो चली गई थीं।

सईदा

(कांप कर) आप, आप गई नहीं थी। रामू कहता था...

अनीला

रामू ने ठीक कहा। मैं जाना तो चाहती थी पर फिर सोचा (बैठ जाती है) आपरेशन करके ही जाऊंगी।

केशव

(गुनगुनाता है) "पंखों मे क्यों बांध दिये पत्थर।" देखा नीरु (देखकर) कहां है नीरु, भाग गई। बहरहाल, प्यार भगाता नही, वापिस खींच लाता है। चुम्बक है।

(मुस्कराता है, अनीला भी मुस्कराती है)

सईदा

आपकी तबियत तो ठीक है।

अनीला

मै बिल्कुल ठीक हूं। तुम चिन्ता मत करो। आपरेशन की तैयारी करो। मै अभी मरीजा को देखने आती हूं।

(अन्दर जाती है)

सईदा

वहुत अच्छा, डाक्टर।

(रामू का सामान लिये प्रवेश)

रामू

अपन चला जायगा। अब नही रहेंगा।

केशव

क्या हुआ रामू ?

रामू

होने कू क्या ववा। सामान उतारो, सामान चढाओ, जायंगा, नही जायंगा, आपरेशन करेगा, आपरेशन नही करेगा, नही नही, आपरेशन करेगा। टैक्सी ड्राइवर बोलता-तुम्हारी डाक्टर वहोत बीमार है, बहोत बीमार।

सईदा

कैसे रे ?

रामू

कहता था सारे रास्ता भर बोलता रहा—रुको, चलो, चलो रुको, लौटो, चलता क्यूं नही, हम आपरेशन नही करेगा, नही करेगा, नही-नही, करेगा–करेगा। हमको

लगता डाक्टर कि दीदी के दिमाग का आपरेशन होना मांगता।

केशव

डा० अनीला हवाई अड्डा पर गया।

रामू

हमकूं टैक्सी ड्राइवर वोलता—तुम्हारा डाक्टर पागल हो जायगा। हवाई अड्डे पर पहुंच कर अन्दर गया। वहां के बाबू ने पूछा—आप जायगा तो बोला, नई भाई, हमकूं नही जाना। डा० केशव को आना था, आया। बाबू बोला-डाक्टर अभी कैसे आने सकता, अभी तो कोई जहाज नहीं आता, एक घण्टे बाद आयंगा।

सईदा

फिर।

रामू

ड्राइवर कहता—फिर दीदी लौट आया। बोला, हम वापिस जायंगा। और फिर रास्ते में बोलता आया, हम आपरेशन करेगा, जरूर करेगा, जरूर मार डालेगा, जरूर बदला लेगा।

केशव

हूं। रोग काफी गहरा है।

सईदा

नर्सिंग होम मे लोग कानाफूसी करने लगे है। बात कब तक छिपी रह सकती है।

केशव

कोई चिन्ता नही, कोई चिन्ता नही। आप तैयारी करे! आदमी कभी-कभी अपने ही से हार जाता है और तिल का ताड़ बना लेता है। कल्पना का भूत जैसे उसकी आंतों में घुस जाता है।

रामू

भूत आंतो में, बाप रे। अपन तो डाक्टर अब यहां नही रहेगा। नमस्ते।

(तेजी से बाहर जाता है।)

सईदा

(हंसती हुई) अच्छा डाक्टर, मै भी चली। आप जल्दी आइयेगा। (कुछ रुककर) और हां...

केशव

बोलो।

सईदा

अब तो आप आ ही गये है। अच्छा हो कि डा० अनीला यह आपरेशन न करे।

केशव

हूं...देखूंगा। अच्छा...

सईदा

धन्यवाद।

(जाती है, तभी अनीला आती है।)

केशव

हलो अनीला !

अनीला

हलो केशव !

केशव

नही जानता था कि तुम इतनी दुर्बल हो सकती हो।

अनीला

मै भी नही जानती थी। पन्द्रह साल तक अकेली जूझती रही।

केशव

यही तुम भूलती हो। तुम अकेली कभी नही थी।

अनीला

जानती हूं, दादा थे...

केशव

नही अनीला! बेशक दादा तुम्हारे सहायक थे, तुम्हारी शक्ति थे, पर उनसे भी बढकर एक और बात थी जिसने तुम्हें बल दिया।

अनीला

(चकित) एक और बात थी ?

केशव

हां अनीला।

अनीला

वह क्या ?

केशव

चुनौती !

अनीला

(ठगी-सी) क्या ! क्या कहा ?

केशव

(दृढ़ता से) क्यों, गलत है ?

अनीला

(उसी तरह) मुझे किसने चुनौती दी, किसने ?

केशव

यह भी बताना होगा ।

अनीला

(बैठकर) मै ··मै चुनौती के कारण यह सब कुछ कर सकी । चुनौती के कारण मैने इतने कष्ट उठाकर, इतनी वेदनाएं सहकर, इस नर्सिंग होम का निर्माण किया, आज का दिन देखा ।

केशव

आज का दिन ही तो इस सचाई को प्रकट कर सका है । यह जो नर्सिंग होम मे ठण्डा तूफान आया है, यह जो तुम्हारी आत्मा कचोट रही है, यह सब इसी कारण है ।

अनीला

(टूटी हुई-सी) काश कि तुम सत्य को जानते, काश कि तुम मेरे दर्द को पहचानते ।

केशव

पहचानता हूँ अनी, पांच वर्ष से तुम्हे पहचान रहा हूँ। तुम तिल-तिल कर जलती हो, तुम्हारे हृदय मे टीसें उठती हैं; तुम्हारी छाती आहों से छलनी हो रही है। और इस सत्य को छिपाने के लिए तुम अनथक प्रयत्न करती हो।

अनीला

(कांपकर) ओह, ओह !!

केशव

(वही दृढ़ स्वर) अन्दर जितनी गहरी पीड़ा होती है। ऊपर तुम उतनी ही करुग बनती हो, उतनी ही हँसती हो। लेकिन तुम्हारी करुणा, तुम्हारी मुस्कान, तुम्हारा हास्य, इन सबका आधार है वही चुनौती। उसी चुनौती ने आज तुम्हें कायर बना दिया। क्योंकि तुम्हारे भीतर बदला लेने की भावना जाग उठी है (अनीला काँपती है) .. लेकिन जब तक इसका रूपान्तर नहीं होगा...

अनीला

(कांपकर एकदम) बस, बस केशव इतने निर्दयी न बनो। मैं कायर हूं क्या ? क्या मैं सचमुच कायर हूं ?

केशव

(दोनों हाथ हिलाकर) भागने वाले कायर के सिवा और कुछ हो ही नही सकते।

अनीला

ओह केशव ! केशव !! मुझे जाने दो ! मुझे यहां से

भाग जाने दो। मै उसे मार डालूँगी। मैं उसकी हत्या कर दूँगी। सच कहती हूँ मै मेरे अन्दर कोई घुसा बैठा है जो मुझसे उसकी हत्या करवा देगा।

केशव

इसी को कहते है बदले की भावना जो चुनौती के कारण पैदा हुई है।

अनीला

(एकदम पिघलकर पास जाती है) केशव, तुम मेरी सहायता करो। मुझे शक्ति दो।

केशव

(दृढ़) मेरी सहायता चाहती हो ?

अनीला

(पूर्ववतः) हां केशव, तुम्हारी सहायता चाहती हूँ। मैं चाहती हूँ कि...

केशव

(एकदम पास आकर) न जाने कब से कह रहा हूं पर तुम हो कि...

अनीला

क्या...क्या मतलब ?

केशव

(मुस्कराता है) मतलब भी बताना होगा। नही अनी, उसे कह न सकूँगा (प्यार से) अनी...

अनीला

(चौंककर) केशव ! वह...वह बात नही...

केशव

वही बात तो है..

अनीला

(मौन रहती है, फिर फुसफुसाती है) वह बात, अब ! इस आयु मे ! नही, नही केशव ! क्या कहेगे सब !

केशव

यही तो कायरता है। सबकी चिन्ता मत करो। अपने को देखो। सबको प्रसन्न करने के लिए अपने को धोखा देना दम्भ है और दम्भ से बड़ा कोई पाप होता है, यह मैं नही जानता।

अनीला

तो...तो...

केशव

(आँखों में झांककर) तो क्या ! तुमने आज तक अपने प्रेम की पीड़ा को नहीं समझा। तुम समझ ही नहीं सकती थी। उस चुनौती ने...।

अनीला

(एकदम) प्रेम क्या है केशव !

केशव

(बैठकर) दूसरे में स्वार्थ को पाना। हम डरे हुए है, इस डर से मुक्ति ही प्रेम की परिभाषा है।

अनीला

नही-नही केशव, आदमी गणित नहीं है। प्रेम कुछ नहीं चाहता, प्रेम स्वयं मुक्ति है।

केशव

(हँस पड़ते हैं) है, पर केवल भावना के संसार में, आकाश में, पुस्तकों में। इस धरती पर तो दो प्राणी प्राण रक्षा के लिए, स्वार्थ के लिए पास आते है, एक-दूसरे से परच जाने को विवश होते है और एक दिन प्रेम के देवता बन जाते है। (खड़े होकर) और प्राणी ही क्यों; अक्सर आदमी किसी विचार से भी ऐसा ही विकट प्रेम करने लगता है (व्यंग से) जैसे तुम चुनौती से; बदले की भावना से कर रही हो। यह गणित नहीं तो क्या है?

अनीला

(कांपकर उत्तेजित) केशव, केशव तुम इतने क्रूर हो सकते हो?

केशव

सत्य सदा क्रूर होता है। और फिर मै तो चीर-फाड़ करने वाला डाक्टर भी हू।

अनीला

डाक्टर तो मै भी हूँ।

केशव

लेकिन नारी भी हो।

अनीला

नारी जब क्रूर होती है...

केशव

तो सब सीमाये लांघ जाती है।...तुम भी यही करने जा रही हो।

अनीला

(एकदम) हां, मैं यही करूंगी, यही करूँगी। मै तुमसे कहती हूँ मै उसे मार डालूँगी। सच केशव, मैं यही निश्चय करके लौटी हूं...।

(सहसा लीला का प्रवेश)

लीला

डाक्टर !

अनीला

ओह ! मिस जोसेफ ! हम अभी आते है, अभी !

(अनीला तेजी से जाती है)

केशव

(सहसा ठिठककर लीला से) डा० सईदा से कहो कि आपरेशन दो दिन बाद होगा...

लीला

(मिस जोसेफ क्षण भर चकित-सी देखती है, फिर मुस्करा उठती है) जी, जी बहुत अच्छा।

(दोनो जाते हैं, परदा गिरता है।)

तीसरा अंक

(दो दिन बाद)

(रंगमंच पर नर्सिंग होम के आपरेशन थियेटर का दृश्य। सामने शीशे की दीवार[1] है। केवल बाईं ओर दो दरवाजे खुले हैं। दूर वाला दरवाजा उस कमरे में जाता है जहां से आपरेशन सम्बन्धी सामान लाया जाता है। पास वाला दरवाजा बाहर आने-जाने का मार्ग है। परदा जिस समय उठता है उस समय वहां कोई विशेष सामान नहीं है। तेजी से रामू के साथ मिस लीला जोसेफ आती है। दोनों दूसरे कमरे में जाते है। दो क्षण बाद, रामू मास्क और केप पहने एक ट्रॉली लेकर आता है। उसे धीरे-धीरे एक ओर रखता है। दो क्षण बाद मिस जोसेफ कुछ औज़ार लेकर आती है। वह ड्रैस अप[2] कर चुकी है। वह औजारों को ट्रोली पर रखती है और पुकारती है।)

लीला

रामू! डा० केशव एनसथीसिया[3] का सामान ठीक कर गये है। उसे छेड़ना नहीं।

---

१. आवश्यकता और सुविधानुसार इस सैट मे परिवर्तन किये जा सकते है।

२. आपरेशन के लिये डाक्टर विशेष वस्त्र पहनते है, उसे 'ड्रैसअप' करना कहते है।

३. रोगी को बेहोश या उसके शरीर के किसी भाग को सुन्न करने का सामान।

रामू

(ट्रॉली लाता हुआ) लीजिये मिस साहब ! अपनकू छेड़ने की क्या दरकार । हम छुएंगा भी नही ।

(ट्रॉली को लाकर एक ओर रखता है । उस पर आक्सीजन सिलेण्डर, गैस सिलेण्डर और इन्ट्रावीनिस इन्जेक्शन आदि का सामान है । उसे रखकर वे फिर अन्दर जाते हैं और स्केलपल्ल (चाकू) और आरटरी फोरसेप्स आदि लाकर रखते हैं । फिर अन्दर जाते हैं और तीसरी ट्रॉली लाते हैं और उन पर स्टेरेलाइज बक्स है जिसमें मास्क, कोट, ग्लोव्स और तौलिये हैं । उसके बाद आपरेशन वाली मेज को बीचोंबीच लाते हैं, रोशनी के ठीक नीचे । उन पर बड़ी स्वच्छ रबर बिछी है । दो क्षण वह सब ट्रॉलियो की जांच करती है फिर रामू से कहती है ।)

लीला

अच्छा रामू । तुम अब डाक्टर केशव को खबर देगा ।

रामू

जी देगा सहसा एक औजार उठाकर) मिस साहब । इसको क्या बोलता !

लीला

शी शी शी, अब बाते नही । पढ़ लो इस पर लिखा हुआ है ।

रामू

अपनकू पढ़ना आता तो आपसे पूछता ।

लीला

(खीझ कर) रामू, इतने दिन हो गया, अब तक पढ़ना क्यों नहीं सीखा ?

रामू

यह हमारा वदकिस्मती है मिस साहब, पण, अब हमने खुशकिस्मत होने को फैसला कर लिया है। इस आपरेशन के वाद हम शादी करेगा।

लीला

शादी करेगां। बेवकूफ ! पढ़ने से शादी का क्या वास्ता ?

रामू

आं, बहुत बड़ा वास्ता मिस साहब ! आखिर अपने शादी भी करना और पढ़ना भी। दोनों काम अलग-अलग करेगा तो खर्च वेशी होगा। हमारे प्रधान मन्त्री कहता कि खर्च कम करो। मुल्क को पैसे की जरूरत है। हम मुल्क से मोहब्बत करता सो हमने तय किया कि हम शादी करेगां।

लीला

और पढ़ेगा नहीं।

रामू

वही तो मिस साहब आप समझा नहीं। हम पढी-लिखी, बी० ए० पास बीबी से शादी करेगां। वह हमारी

बीबी होगा, हमारा घर रखेगा और हमें पढ़ायेगा और इस तरह...

लीला

पढाई का खर्च बच जायेगा (खूब जोर से हँसती है) बेवकूफ !...

रामू

अब आप समझा... अ, क्या कहा बेवकूफ ! ना मिस साहब ! अपन बहोत सोच-समझ कर फैसला किया है। मुल्क का सब लोग ऐसा ही करेगा तो कितना पैसा बचेगा और मुल्क अमीर बन जायगा।

लीला

(खूब हँसती है) तुझे सूझी तो दूर की पर बेवकूफ ! बी० ए० पास लड़कियां तेरे जैसो से शादी क्यों करेगी।

रामू

आँ क्यों नही करेगा ? उनको काम जो मिलेगा ? नहीं तो इतना सब औरत लोग पढ़कर क्या करेंगा। और हां, अगर कोई तुम्हारी तरह डाक्टरी भी पढ़ा हो तो हम डाक्टर भी बन जायंगा। दवा-दारु का खर्च बचेगा। अपन समझता कि हर बीबी को डाक्टर होना चाहेंगा।

लीला

(हँसते-हँसते एकदम) अच्छा, अच्छा। अब तू चुपचाप डा० केशव और दीदी को बता कर आ।

रामू

जाता है मिस साहब ! पण अगर अपनकू डाक्टरी आ जाय तो अपन दीदी की खूब मदद करेगा। दोनों मियाँ बीबी करेगा। तुम्हारी जरूरत नही रहेगा...

(तेजी से जाता है। लीला फिर व्यस्त हो जाती है। तभी डा० सईदा आती है। काफी गम्भीर है। आते ही ड्रैसअप करती है। फिर सब कुछ देखती है। इसी बीच में लीला पास आकर बातें शुरू कर देती है।)

लीला

डाक्टर ! मिस्टर सतीशचन्द्र शर्मा आये थे। बड़े घबरा रहे थे।

सईदा

उनका घबराना ठीक है, लीला। मरीजा अब भी बहुत कमजोर है। गाल ब्लैडर मे स्टोन है, उसे काटना पड़ेगा। इस उमर में बीवी को कुछ हो जाय तो...

लीला

सुना था आप को केन्सर का शक था।

सईदा

कुछ कहा नही जा सकता। शायद ऐसा कुछ नही है। कमर मे दर्द के कारण मुझे शक हुआ था। (फिर कान में कुछ कहती है। लीला भी गम्भीर होती है) कुछ भी हो लीला। मुझे मिस्टर शर्मा पर बड़ी दया आती है।

लीला

सभी को आती है।

सईदा

बेचारा अपनी पत्नी को कितना प्यार करता है।

लीला

और डा० अनीला पर उसको कितना भरोसा है। लेकिन डा० अनीला है कि उससे मिली तक नही। मुझे तो...

सईदा

यह राज अब तक समझ मे नही आया। उनसे क्यों नही मिली क्यो...मुझे डर लगता है कि आज...

लीला

मिस्टर शर्मा आज पूछते थे कि डा० अनीला कहां की रहने वाली है। कब से नर्सिंग होम खोला है।

सईदा

तुमने क्या कहा ?

लीला

वैसे ही इधर-उधर की बातों में टाल दिया। फिर पूछने लगे विधवा कब हुई ?

सईदा

यह नही पूछा कि दूसरा विवाह क्यो नहीं किया ?

लीला

पूछा था।

सईदा

(एकदम) तुमने क्या कहा ?

लीला

मै क्या कहती ? दूसरो की जिन्दगी मे गहरा उतरने का मुझे क्या अधिकार है ?

सईदा

(हतप्रभ) तुमने ठीक किया लीला, ठीक किया।... डा० केशव पांच साल से कह रहे है पर वे है कि बार-बार इन्कार कर देती है। कोई बात है जो वह सबसे छिपा रही है। (काम करती रहती है।)

लीला

लेकिन डाक्टर! यह भी कैसी बात है कि इस राज को छिपाकर दीदी इतना ऊंची उठ गई। बड़ा दुख, बड़ा दर्द होता होगा।

सईदा

जरूर होता होगा मिस जोसेफ। कभी-कभी दु:ख और दर्द ही इन्सान को ऊँचा उठा देते है। यह दूसरी बात है कि बहुत कम इन्सान उस ऊँचाई पर ठहर सकते है।

लीला

ठहरे कैसे? वह ऊँचाई कच्ची जो होती है।

सईदा

(शीघ्रता से औजारों की ट्रॉली के पास जाती है) ओह

लीला, होती होगी, वहस मे पड़कर कही कोई चूक न कर बैठना ।

लीला

नही डाक्टर । लीला चूकने वाली नही है ।

सईदा

मै जानती हूं फिर भी...अच्छा मै मरीजा को लाने का प्रबन्ध करूँ (जाते-जाते) न जाने क्यों मुझे आज डर लग रहा है । न जाने क्या होने वाला है...काश कि डा० अनीला वीमार हो जाय । नही तो, नही तो...

(तेजी से बाहर जाती है । लीला नहीं सुनती । चुपचाप काम करती है । फिर आपरेशन-मेज़ के पास आकर उसे ठीक करती-करती फुसफुसा उठाती है ।)

लीला

कभी-कभी दुःख और दर्द इन्सान को ऊँचा उठा देते हैं लेकिन यह दूसरी बात है कि बहुत कम इन्सान उस ऊँचाई पर ठहर सकते हैं ।...नही ठहर सकते क्योकि वह ऊंचाई कच्ची होती है ।...आज देखना है कि दीदी ठहरती है या नही । क्या इस मेज के सामने खड़ी होकर वह डाक्टर की प्रतिज्ञा याद रख सकेगी ? क्या...

(तेज़ी से सतीशचन्द्र शर्मा का प्रवेश । बेहद घबराहट के चिह्न उनके मुख पर स्पष्ट हैं ।)

स० च० शर्मा

हैलो !

लीला

(चौंक कर) हैलो (देखकर) आप यहां क्यों आ गये ?

स० च० शर्मा

सब ठीक है ?

लीला

सब ठीक है। आप चिन्ता न करें। आप जायं।

स० च० शर्मा

जीहां, पर यह डा० केशव कौन है ?

लीला

आप उन्हें नही जानते। प्रसिद्ध एनसथेटिस्ट है। इस ओर दूर-दूर तक एनक्षथीसिया देने में उनसे बढ़ कर कोई नही है। डा० अनीला ने उन्हें खास तौर पर बुलाया है। दोनों बड़े मित्र है।

स० च० शर्मा

ओह सच। सुना तो है कि बड़े कुशल है।

लीला

जीहां, जीहां। मेहरबानी करके आप बाहर बैठियेगा। आपने गोपाल को भेज दिया, यह बड़ा अच्छा किया।

स० च० शर्मा

भेजना पड़ा। आपकी दीदी डा० अनीला मानी ही

नहीं । अच्छा, आपरेशन तो डा० अनीला ही करेगी । सुना था कि डा० केशव करनेवाले थे...

लीला

जी आम तौर पर गाल ब्लेडर जैसे आपरेशन लेडी डाक्टर नहीं करती पर, दीदी तो कालेज मे करती रही है इसीलिये वे ही करेगी ।

स० च० शर्मा

और डा० केशव ।

लीला

कहा न कि वह तो एनसथीसिया देने के लिये आये हैं । आप जाइये न । मुझे खेद है कि आप अन्दर नहीं आ सकते । यकीन रखिये सब कुछ ठीक है और आगे भी ठीक ही होगा ।

स० च० शर्मा

सच, ठीक होगा ? क्या डा० अनीला मेरी पत्नी को वचा लेगी ?

लीला

वह यही कोशिश कर रही है । हर डाक्टर यही कोशिश करता है । आप कृपा करके...

स० च० शर्मा

जीहां । आप मुझे तुरन्त बता देना और बीच में भी...देखिये । वड़ी कृपा होगी...

लीला

जरूर...जरूर... ।

स० च० शर्मा

धन्यवाद, शुक्रिया ।

(जाता है। लीला दो क्षण देखती है, फिर गरदन हिला कर कहती है)

लीला

आदमी कितना दुर्बल है कितनी जल्दी घबरा जाता है ?

(सईदा का प्रवेश)

सईदा

लीला ! डाक्टर ने सोडियम पैन्टोमाल[1] के लिये मना कर दिया है। स्पाइनल एनसथीसिया[2] देना होगा।

लीला

वह भी तैयार है।

सईदा

तो तुम्हे पहले ही पता था। तभी डाक्टर अनीला का तुम पर इतना भरोसा है।

लीला

(हँसती है) दीदी को तो सभी पर भरोसा है।

---

१. इन्ट्रावीनस इन्जेक्शन देकर बेहोश करने वाली दवा।

२. आपरेशन वाले भाग को सुन्न कर देने की क्रिया।

सईदा

ना लीला ! सब पर होता तो शादी न कर लेतीं ।

लीला

(हँस कर) कैसी बात है ? घूम-फिर कर हम हर बार दीदी की घरेलू जिन्दगी की चर्चा करने लगते है ।

सईदा

(हतप्रभ) हमे ऐसा नही करना चाहिये । (एकदम) हां, मिस जोसेफ ! मरीजा आ रही है, आपरेशन रूम के पास कोई न आए ।

लीला

जीहां, सबको उधर बैठने को कह दिया है । वैसे मै फिर देखे लेती हूँ ।

(जाती है, नीरु आती है)

नीरु

(झांक कर) मरीजा चल दी है।

सईदा

मालूम है, आप जाएं ।

नीरु

घबराने की कोई बात नही । बादल उठेगे, उमड़ेगे, घुमड़ेगे पर बिना बरसे लौट जाएंगे ।

सईदा

(तेज़ी से) तुम अपने कमरे में चलो...चलो । यहां रोज मरीज आते है, रोज आपरेशन होते है, मरना-जीना

तक होता है पर दूसरे मरीज सोचते तक नहीं। न जाने इस बार क्या हुआ है।

नीरु

(जाते-जाते) अपने से पूछो, आइने में अपनी सूरत देखो, तो जवाब मिलेगा।

सईदा

(पीछे पीछे) ओह ! तुम जाओ, जाओ नीरु।

(दोनों जाती हैं और तभी स्ट्रेचर पर मरीजा को लिये चार व्यक्ति आते हैं। मरीजा शान्त लेटी है। छाती का भाग सफेद चादर से ढका है। मुख, सिर दोनों खुले है। मुख का कुछ पीला-पीला भाग दिखाई देता है। पीछे-पीछे लीला आती है। आगे आकर वह आपरेशन टेबुल के पास आ जाती है।)

लीला

इधर, इधर ले आओ।

(तभी डा० सईदा भी आ जाती है। स्ट्रेचर को मेज से सटा दिया जाता है और लीला-सईदा सब मिल कर मरीजा को बहुत सावधानी से मेज पर लिटा देते हैं।

सईदा

बस... बस... धीरे... हां, धीरे बस...

(चारों व्यक्ति जाते है। डाक्टर सईदा मरीजा की जाँच करती है। तभी डा० केशव आते है।)

केशव

रोशनी ठीक कर दो, मिस जोसेफ !

लीला

अभी लो डाक्टर ।

(रोशनी तेज़ होती है । केशव मास्क और टोपी लगाकर कई क्षण मरीजा की स्टेथ्सकोप से जांच करते हैं, फिर मुस्कराकर मरीजा से कहते हैं)

केशव

घबराना नहीं मिसेज शर्मा ! तुम बहादुर औरत हो । कुछ ही देर की बात है । तुम्हें पता भी न लगेगा और सब कुछ ठीक हो जायगा । (मुड़कर) मिस जोसेफ ! इन्जेक्शन ।

लीला

अभी लो (एनसथीसिया वाली ट्रोली सरकाती है) यह लो डाक्टर ।

(केशव इन्जेक्शन तैयार करते है । लीला तब तक मरीजा से हँस कर कहती है ।)

लीला

आपकी सेहत बड़ी अच्छी है । पता भी न लगेगा । न...न ..इस तरह दिल छोटा मत करो, घबराओ नहीं । डा० अनीला ने बड़ी मेहनत की है ।...

सईदा

ये तो बिल्कुल ठीक है । ये भला क्यो घबराएंगी ?

केशव

हां, तुम अभी तगड़ी हो। तुम्हें जिन्दा रहना है। (मुड़कर) मिस जोसेफ। करवट लिटा दो।

(सईदा मिस जोसेफ की सहायता से मरीजा को करवट दिलाते हैं। डा० केशव पीठ में सुई लगाते है। उसके बाद लम्बर पंकचर नीडल लगाते है। एक क्षण रुकते है। नीडल में से एक बूँद पानी टपकता है। उसी में फिर सुई लगाकर पिचकारी से दवा डालते हैं। फिर नीडल आदि निकाल लेते है। मरीजा टेढ़ी ही रहती है। गरदन उठी रहती है। इसी बीच में अनीला आकर एक निगाह उन पर डालती है फिर रुक कर मरीजा को देखती है। केशव बराबर नब्ज पकड़े हैं।)

केशव

तैयार हो जाओ, डाक्टर।

अनीला

क्या मै ड्रैसअप कर लू ?

केशव

बेशक ! सब कुछ तैयार है।

(लीला ब्लड प्रैस्सर देखने का सामान लाती है)

लीला

डाक्टर, यह लीजिये !

केशव

ओह मिस्टर ! तुम तो...मैं कहने ही वाला था।

(कहकर वह मरीजा का ब्लड प्रैस्सर देखते है। नर्स और डा० सईदा सहायता करते हैं। इसी बीच में डा० अनीला ड्रैसअप

करती है। सहसा उसका मुख गम्भीर हो जाता है। वह बोलती नहीं पर कभी तो बहुत धीरे-धीरे हरकत करती है, कभी एकाएक रुक जाती है। कभी-कभी डा० केशव, डा० सईदा उसे देखते हैं। एकाएक अनीला चौंक कर बोल उठती है।)

अनीला

(चौंककर) क्या है ?

केशव

कुछ नहीं, सब ठीक है।

अनीला

(संभल कर) ओह...

केशव

क्या हुआ डाक्टर ?

अनीला

(फीकी हंसी) कुछ नहीं, वैसे ही पूछती थी, ब्लड प्रैस्सर ठीक है न।

केशव

बिल्कुल ठीक है।

(अनीला तेजी से ड्रैस्सअप करती है। करती-करती तेजी से फिर गरदन हिलाती है। डा० सईदा घबराकर पास आती है पर अनीला तुरन्त मुस्करा पड़ती है।)

अनीला

सईदा ! ब्लड प्लाज्मा तैयार है।

सईदा

जीहां।

अनीला

तो चालू कर दो ।

(सईदा मुड़कर नर्स की सहायता से ब्लड प्लाज्मा देती है । अनीला तब तक ग्लोव्स निकाल कर पहनती है । आपरेशन की मेज के पास आती है । डा० केशव इशारा करते हैं कि सब ठीक है । वह नब्ज संभाले रहते हैं । अनीला पेट उघाड़ती है । मरीजा को देखकर मुस्कराती है और पेट पर आयोडिन पेन्ट करती है । करने के बाद पूछती है)

अनीला

(मुस्करा कर) कैसी तबियत है आपकी ?

सईदा

(मुस्करा कर) बिल्कुल ठीक । ठीक है डाक्टर । देखो तो मुस्करा रही है ।

(अनीला चमिटी से खाल पकड़ती है)

अनीला

क्यों दर्द होता है ?

सईदा

(मरीजा को देखकर) बिल्कुल नही । इनको पता भी नही लग रहा ।

(अनीला एकाएक जैसे खो जाती है । खाल को चमिटी से पकड़े रहती है । सईदा देखकर कहती है)

अब शुरू करें ।

अनीला

(चौंककर चमिटी रखती है) हाॅ, (केशव से) नब्ज ठीक है ?

केशव

ठीक है डाक्टर।

अनीला

बहुत अच्छा।

(अनीला मरीजा के पेट पर तौलिये रखती है। आपरेशन जहां करना है उतना भाग छोड़ कर सबको ढक देती है)

अनीला

सिस्टर !

लीला

जी डाक्टर !

अनीला

स्केलपल ।

लीला

सब तैयार है ,

(औजारों वाली ट्रोली को पास करती है। अनीला स्केलपल उठाती है। तेजी से कांपती है। केशव बोल उठते है)

केशव

(धीरे से) डाक्टर !

अनीला

क्या है ?

केशव

तुम्हारा हाथ कांप रहा है।

अनीला

नही तो (वह दृढ़ता से चाकू पकड़ती है) नही।

(उसके चेहरे के भाव तेज़ी से बदलते हैं। एक बार मरीजा के पेट को देखती है फिर केशव को, जो मुस्करा पड़ता है। एक क्षण उसी को देख कर वह चाकू को दृढ़ता से पेट पर रखती है। डा० सईदा आरटरी फोरसेप्स लेकर आगे आती हैं। तभी मंच पर प्रकाश मन्द होने लगता है और तुरन्त पूर्ण अन्धकार हो जाता है। केवल आपरेशन वाली मेज के आसपास धुँधला-सा लाल प्रकाश रहता है। धुंधली मूर्तियाँ दिखाई देती हैं। उसी समय नेपथ्य में से एक आवाज़ उठती है। शरारतभरी, प्रतिहिंसा पूर्ण। इस आवाज के साथ प्रकाश पड़ता रहता है। वह प्रकाश मरीजा पर नहीं पड़ता केवल तीनों डाक्टरों के मुख और हाथों पर पड़ता है। अनीला मधुलक्ष्मी का नाम सुन कर कांपती-सी है। फिर तुरन्त दृढ़ हो जाती है।)

आवा[1]

डा० अनीला! शाबास, यही सुनहरी अवसर है। अपनी इच्छा पूरी करो। अपना बदला लो, नारी के अपमान का बदला लो।... सुनो अनीला। सुनो! मै

१. यह आवाज़ पहले से रिकार्ड की जा सकती है।

मधुलक्ष्मी हूं, मुझे भूलो मत। मै ही तुम्हारे जन्म का, तुम्हारी प्रगति का, तुम्हारी शोहरत का कारण हूं। मैं नारी का बदला चाहती हूँ। मै पुरुष को तडपते देखना चाहती हूँ। बह जाने दो रक्त.. निकल जाने दो प्राण... नस-नाडियो को बन्द मत करो...सईदा को परे हटा दो, वह तुम्हारी शत्रु है। तुम सुनती नही...तुम सुनती नही, अनीला ! अनीला ! देखो, देखो, केशव की ओर न देखो। इस गाल ब्लेडर को देखो, कैसा खराव है, न, न, इसे काटो मत, इसे काटो मत, (तीव्र स्वर) नहीं, नही, रुको, रुको, तुम सुनहरी अवसर खो रही हो, तुम आत्महत्या कर रही हो, तुम शत्रु को प्राण दे रही हो, तुमने इसे मार डालने का निश्चय किया था, तुमने— (हताश क्रोध) ओह काट दिया, तुमने गाल ब्लैडर काट दिया, तुमने सईदा को नही हटाया, तुमने केशव की बात मानी (अल्प विराम जैसे धौंकनियां चलती हों। फिर एकदम तेज) अब भी अवसर है, छोड़ दे, फोरसेप्स अन्दर छोड़ दे, सी मत, सी मत, ओह, ओह, तू नहीं सुनती, नही सुनती, ओह, ओह, तूने मुझ पर ही छुरी चला दी, तूने मधुलक्ष्मी की हत्या कर दी, तू अपने अपमान को भूल गई, अपनी प्रतिज्ञा को भूल गई।

(एकदम प्रकाश होने लगता है, उसी के साथ आवाज एकदम समाप्त, डाक्टर मरीजा की पट्टी करती दिखाई देते है। लीला

एकदम बाहर जाती है और तुरन्त चार व्यक्ति स्ट्रेचर लिये आते हैं। मरीजा को धीरे-से उस पर लिटा कर ले जाते है। नर्स भी जाती है। पूरा प्रकाश होता है। सब ड्रेस उतारने लगते हैं कि सहसा डा० अनीला कांप कर संज्ञाहीन-सी होकर गिरती है। डा० केशव संभालते है।)

केशव

डा० अनीला क्या है ?

(अनीला केशव के कन्धे पर गिर जाती है)

सईदा

डाक्टर, डाक्टर।

अनीला

(संभल कर) कुछ नही। कुछ नही !...

(तेजी से दादा आते हैं)

दादा

कहां है डाक्टर अनीला ? कहां है ?

अनीला

(कांप कर) दादा ! दादा !!

(तेजी से दौड़ कर चिपट जाती है। दादा प्यार से उसे थप-थपाते है)

दादा

इस मेज के पास आकर तुम कुछ और कर ही नहीं सकती थी। कुछ और हो ही नही सकता था।

(तेजी से श्री शर्मा की आवाज उठती है)

शर्मा

मै उनसे जरूर मिलूँगा, जरूर! एक मिनिट के लिये। बस...

नीरु

हाँ-हाँ, जाने दो। अब जाने दो।

रामू

नही, नही अन्दर नही, अभी अन्दर नही जायंगा, नही जायंगा।

शर्मा

एक मिनट, बस एक मिनिट।

नीरु

जाने दो बाबा। जाने दो ना।

(अनीला चौंकती है)

अनीला

दादा !

दादा

(धीरे-धीरे) अब कोई डर नही। (जोर से) आने देगा रामू ।

(तेजी से शर्मा, नीरु व रामू का प्रवेश)

शर्मा

(बोलता आता है) डाक्टर आपने मुझे बचा लिया। आपने मुझे जीवन दिया। मै...

(तभी सहसा दृष्टि मिलती है जैसे भूकम्प का तेज़ धक्का लगता है। चीखते-चीखते रह जाता है)

आप...आप...दादा...

दादा

(आगे बढ़ता हुआ) हां, मै दादा, कर्नल माधव, तुम्हारा साला।

अनीला

(एकदम) दादा, मुझे अभी शशि के पास जाना है

(शर्मा से) आपकी पत्नी का आपरेशन सफल हुआ। वह जल्दी तगड़ी हो जायगी। बधाई।...आओ केशव।

केशव

चलो।

(दोनों तेजी से जाने को मुड़ते हैं। शर्मा और भी हत्प्रभ-कम्पित। तभी दादा कहते हैं)

दादा

यही थी डा० अनीला, तुम्हारी पहली पत्नी मधुलक्ष्मी शर्मा, जिन्हें तुमने पन्द्रह वर्ष पहले इसलिये छोड़ दिया था कि तुम्हारे अफसर बन जाने के बाद वह तुम्हारे योग्य नहीं रही थी। कम पढ़ी-लिखी थी। सोसायटी में घूम-फिर नहीं सकती थी, बैठ-उठ नही सकती थी, खा-पी नही सकती थी...

(दादा तेजी से बोलते चले जाते हैं, दूसरे सब लोग चकित कम्पित एक दूसरे को देखते हैं, शर्मा मुड़कर चीखते से हैं)

शर्मा

मधुलक्ष्मी ! मधुलक्ष्मी !!

(केशव और अनीला तब तक बाहर पहुंच चुके हैं)

दादा

मधुलक्ष्मी मर चुकी है। यह डाक्टर अनीला, और तुम्हारे लिये केवल डाक्टर।

(कहता-कहता शर्मा को प्यार से थामकर बाहर ले जाता है। बाकी लोग जो बुत बने खड़े हैं, सहसा मुस्करा पड़ते है। यहीं परदा गिरता है)

◇ ◇